प्रतिबिम्ब

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

प्रतिबिम्ब

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5607-615-0

दाम : 200 रूपया

पहिल संस्करण :2022

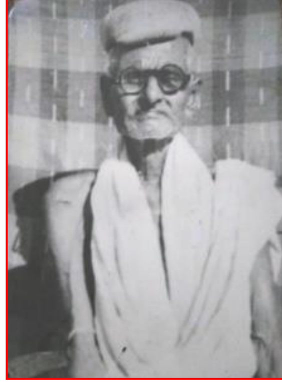
लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

प्रतिबिम्ब

A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण



पूज्य पितामह स्वर्गीय श्रीशरण मिश्रक

स्मृतिमे

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

दू आखर....

प्रतिबिम्ब उपन्यास हम सन् १९८६मे लिखने रही । ओहि समयमे हम इलाहाबादमे रहैत रही । एहि बीचमे कैकठाम बदली भेल,कैकटा मकान बदलल । स्थानांतरणमे समान सभक संगे कतेको वस्तु एमहर-ओमहर भए गेल । मुदा ई पाण्डुलिपि बाँचल रहि गेल ।

एमहर हमर मैथिलीमे उन्नैसटा पोथी (एगारहटा उपन्यास ,तीनटा निवंध संग्रह,एकटा आत्मकथा,दूटा संस्मरण,एकटा यात्रा प्रसंग,आ एकटा कथा संग्रह) प्रकाशित भेल । मुदा ई पाण्डुलिपि ओहिना रहि गेल । आखिर, डाक्टर उमेश मण्डलजी एकर पाण्डुलिपिकेँ टंकित केलाह । तकर बादे ई पोथी प्रकाशित भए सकल । एतेक पुरान कागजपर हाथसँ लिखल पाण्डुलिपिक फोटो ह्वाट्सअपपर निर्मली पठाएब आ तकरा टंकित करब बहुत मोसकिल काज छल । से ओ अत्यंत परिश्रमपूर्वक प्रयास कए संभव केलनि । ताहि हेतु हुनका हार्दिक धन्यवाद!

छत्तीस साल पूर्वमे हम एकरा लिखने रही । तहिआसँ समाज बहुत बदलि गेल,परिस्थिति बहुत बदलि गेल । तेँ कैकटा प्रसंग अप्रसांगिक लागि सकैत अछि । कैकटा बात अनसोहांतो लागि सकैत अछि । मुदा एहि पोथीक हमर साहित्यिक यात्रामे एकटा ऐतिहासिक महत्व तँ अछिए ।

आशा अछि जे पाठक लोकनि एहिसभ बातकेँ ध्यानमे रखैत पोथी पढ़ि आनंद उठा सकताह ।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

28.01.2022

प्रतिबिम्ब

1

ओहि गाममे सभ जातिक लोकक बास छैक। बाभन, गुआर आ कोइरी बेसी घर। हजाम, धोबी, तेली एक घर, दू घर। एकाध घर डोमो मुदा गामसँ एकदम फराक ओकर बास छलैक। बभनटोली, गुअरटोली ओ कोरियानी तीनू मिला कए एकटा गाम छलैक- शक्तिपुर। सभ प्रकारेँ गाम स्वावलंवी छल। कहबाक माने से। धनीक गरीब सभ गाममे छलैक मुदा धनीक कम गरीब बेसी। एक-दू घर बाभन, एक घर गुआर बेसी धनीक मुदा आओर लोकसभ कहुना कए फाका मस्ती करएबला सभ।

हीराबाबू ओ जानकी बाबूक पक्का घर पोखरिसँ पश्चिम छलनि। हुनका लोकनिक परिवारमे सभ एक सँ एक बढ़ल-पढ़ल, हाकिम सभ रहथि। पोखरिसँ पूब जीतन रायक ओहिना पक्का, घर छलनि। गाममे जीतन रायक आबाजाही हीराबाबू आ जानकी बाबू धरि सीमित छल। हुनकासभकेँ आपसमे हकार-तिहार सभ होइत छलनि। कोनो विशेष अवसरपर जीतन रायक ओहिठामसँ लोक नोतो पुरबाक हेतु हुनका सभक ओहिठाम जाइत छल। आओर सौंसे गाम खोपड़ी। बाभन-गुआर-कोइरी सभ वर्गक लोककेँ फुसक घर छलैक आ जकरा बड्ड तकरा घरपर खपड़ा। गामसँ सटले पीच सड़क। रिक्सा पकड़ि पहुँचि जाउ मधुबनी टीसन, मात्र पनरह मिनट समय लगैत छलैक।

गाममे अधिकांश लोक खेतीबारीमे लागल रहैत छल। खेत-पथार कम रहबाक कारणेँ बेसीकाल बेसाहे लगैत छलैक। की बाभन, की गुआर सभ पेटक कारणेँ कोनो बड़का लोकक आश्रयमे

रहैत छल। दोसर कोनो उपायो नहि छलैक। ई तीनू महाशक्ति रूस, अमेरिका आ चीन जकाँ गाममे शक्ति संतुलन बनओने रहैत छलाह। छोटका लोकसभ सेहो तीन गुटमे बँटि गेल छल। बाभन एकठाम, गुआर सभ एकठाम आ कोइरी सभ से फराके एकठाम। कहए लेल गाममे एकदम शान्ति छल मुदा सदिखन किछु-ने-किछु होइते रहैत छल। आन्तरिक शक्ति संघर्ष सतत, अनवरत चलिते रहैत छल।

गामक पूबरिआकातमे एकटा पोखरि छलैक। ओहिठाम महादेबक मन्दिर आ बहुत रास फूलक गाछ छल। तीनू दरबारक स्त्रीगण, धिआ-पुता पुरुष सभ ओतहि बैसार करैत छलाह। पोखरिक भीरपर नीक-नीक फूल छलैक। दुनू कात घास आ बीचमे एकपेरिया रस्ता। उत्तरबरिया भीरपर अखाड़ा आ पछबरिया कात धर्मशाला। एश्वर्यक प्रतीक सहरक पार्कनुमा ई स्थान हीराबाबू, जानकी बाबू ओ जीतन रायक सम्मिलित प्रयासक परिणाम छल। बीचमे किछु जमीन छोटकालोकसभक छलैक। तकरा सभकेँ धकिआ कए कात कए देल गेल छल ।

जानकी बाबूक आमदनीक मुख्य स्रोत लहना लगानी छलनि। हीराबाबू सेहो एहिमे ककरोसँ पाछा नहि छलाह। जीतन राय एहि मामिलामे हिनका लोकनिसँ नीक छलाह। किएक तँ ओ गामक लोकसँ किछु नहि लैत छलखिन। बेर-कुबेर सेर-दू-सेर मगनिओ दैत छलखिन। ताहि लए कए गाममे मोजरो बेसी हुनके छलनि आ लगातार नओ वर्षसँ ओएह मुखिया छलाह। बी.डी.ओ., स्थानीय एम.एल.ए. सभसँ बेस मेल-जोल छलनि। तीन पंचायतक सरकारी दोकान हिनके ओहिठाम चलैत छल।

गाम-घरक जतेक नव-नव योजना सभ छलैक सेहो इएह देखैत छलाह। कुल मिला कए रायजी बहुत बुधिआरीसँ अर्थोपार्जन करैत छलाह।

एकदिन गामक तीनू महाशक्तिक सम्मेलन भेल आ ई निश्चय कएल गेल जे पुरबारि भागमे एकटा पोखरि खुनाएल जाए। रायजी बीस हजार टाका देबाक हेतु तैयार भए गेलाह। हीरा बाबू ओ जानकी बाबू सेहो दू-दू बीघा जमीन देबाक हेतु तैयार भेलाह मुदा समस्याक समाधान एहिसँ नहि भेल। बीचमे करीब डेढ़ बीघा जमीन तेतरि यादबक पड़ैत छलैक। ओहि जमीनक बिना हिनका लोकनिक योजना सफल होएब असंभव। अस्तु, सोच विचार प्रारंभ भेल। तेतरिसँ संपर्क कएल गेल मुदा ओ टस सँ मस नहि होइत छल कारण ओकरा ओएहटा आधारे छलैक। जानकी बाबूक पारा गरम भेल जा रहल छलनि। जानकी बाबू अपन लहनाक पोथी निकाललाह। दस वर्ष पूर्व तेतरिक पिताक देहांत भए गेल रहैक। तीन मोन चाउर आध मोन दालि चारि पसेरी आलू मदति कहि कए ओ देने छलखिन। तेतरि नेहाल भए गेल छल। सौंसे गुआरटोलीमे जानकी बाबूक जयजयकार भए गेल रहनि। श्राद्ध सम्पन्न भेल छल कि तेतरिक ओतए जानकी बाबू तगादा करए पहुँच गेलाह। तेतरिक हाथ जेँ खाली छलनि तेँ ओ ई कर्म केने छलाह। मुदा जानकी बाबू सेहो बेसी जोर नहि देलखिन। तेतरि कागज बना देलखिन। समय बीतैत गेलैक। अभावसँ कहिओ उबार नहि भेलनि। परिणामत: जानकी बाबूक देन रहिए गेलनि। ओहो तगादा नहि केलखिन। आइ ई लहना बेस कारगर अस्त्र सिद्ध भए रहल छल।

ड्योढ़ाक ड्योढ़ा, तकर ड्योढ़ा एहि तरहें कुल मिला कए 150 मोन चाउर 25 मोन दालि 10 मोन अल्लु ने तँ सभक बदलामे रूपया लहना भए गेल छलनि। सौंसे गामक बैसार भेल। तेतरिकेँ दोषी पाओल गेल।

अन्ततोगत्वा, तेतरि कर्ज कबूल कए लेलखिन। पासमे टाका नहि छलनि तेँ सबा बीघा जमीन जानकी बाबूकेँ लिखि देलखिन। एहि तरहें पोखरिक निर्माण भेल।

एहि प्रकारसँ दरिद्र होमए बला ओहि गाममे तेतरि असगरे नहि छलाह। कैकबेर कैकगोटाक श्राद्ध, उपनयन, बिआह अहिना होइत छलैक। बेस आरामसँ कर्जा भेटि जाइत छलैक। काज संपन्न भेलाक बाद ककरो चास, ककरो बास कोनो-ने-कोनो महाशक्तिक अधीनस्थ भए जाइत छलैक। एहि तरहेँ गरीबक संख्या बढ़िते जा रहल छलैक । ओमहर जानकी बाबू, हीरा बाबू ओ रायजीक दू महलापर तिमहला बनले जा रहल छलनि। मुदा ई सभ सोचबाक-विचारबाक ककरा प्रयोजन छलैक? सभ अपन-अपन काजमे लागल रहैत छल। ■

2

तेतरि आ बूधन मधुबनी बजारसँ लौटि रहल छलाह। तेतरि पैरे-पैरे चलैत छलाह। बूधन रिक्सासँ छलाह।

"आबह-आबह तेतरि रिक्सेपर आबि जाह।"

"ठीके छैक बूधन भाइ।"

"ठीक कोना छैक। तोरा तँ जहिना सभ बातमे संकोच रहैत

छह। आबि जाह, गप्प-सप्प करैत गाम पहुँचि जाएब।"

दुराग्रह देखि तेतरि रिक्सापर बैसि गेलाह।

"केतए गेल छलह भाइ?" पूछलखिन बूधन।

"मधुबनीमे छौड़ाक नाम लिखाबक छल। ओही इसकूलमे तँ हीरो बाबूक एकटा बेटी पढ़ैत छैक ने।"

"हँ, हँ ठीके कहलह। ओतहि छात्रावासमे रहैत छैक। शनि, रविक गाम अबैत छैक।"

"रायजीक ननकिरबा सेहो तँ ओहीमे पढ़ैत छैक।" -तेतरि कहलकैक।

"से नहि बूझल अछि। कारण ओ छौड़ा तँ गामो नहि अबैत छैक।"

इएह गप्प-सप्प होइत दुनू गोटे गाम लग पहुँचैत छलाह कि एकाएक एकटा फटफटिया आएल आ ओहि रिक्सामे धक्का मारलकैक। "एक्सीडेंट, एक्सीडेंट,..." चिचिआइत बूधन कुदलाह। रिक्सा बला सेहो फानल मुदा तेतरि ओहिठाम खसि पड़लाह। बूलेट फटफटियाक चक्का हुनका ऊपर चढ़ि गेल। फटफटियाबलाकेँ बूधन चिन्हि लेलखिन मुदा ओ तँ इएह-ले ओएह-ले भागल। तेतरि पाँच-दस मिनटमे ओहीठाम प्राणत्याग कए देलाह। बूधन साहस कए कए रिक्सा लग अएलाह। रिक्सा लग तेतरि पड़ल छलाह- नि:शब्द, प्राणहीन। रिक्सा बला सेहो सहटि कए आएल। बूधन डरा गेलाह।

"आब की होएत? एहि खूनक गबाह के बनत? सेहो हीरा बाबूक बेटाक खिलाफ। असंभव।"

रिक्सा बलाकेँ इसारा देलखिन- “भाग, तकै की छैं?”

तेतरिक प्राणहीन शरीर ओहिना राति भरि बीच सड़कपर पड़ल रहल।

तेतरिक घर उजड़ि गेलनि। सभटा चास लहनातरीमे समाप्त भए गेलनि। तैओ तेतरि हिम्मति नहि हारलाह। सभदिन पैर मधुबनी जा कए दूध बेचि अबैत छलाह। तीनटा महिष पोषने छलाह आ ओही आमदनीसँ परिवारक पालन भए जाइत छलनि। दूटा बेटा, तीनटा बेटी जाहिमे जेठकीटा सासुर बसैत छलनि। सात आदमीक परिवारमे आब बाँचि गेल छल तेतरिक आँगनसँ आ ओकर चारिटा छोट-छोट नेना सभ। सभ अनाथ-अपसियाँत छल।

तेतरिक मृत्युक समाचार भोरे सौंसे गाम पसरि गेल। प्रातः काल चरवाह सभ महिष लए कए गेल तँ तेतरिक लास देखि घबड़ा गेल। आधा लास नढ़िया खा चुकल छल। प्राणक कतहुँ कोनो अवशेष नहि। सौंसे गाम करमान लागल छल। की भेलैक, कोना मरलाह तेतरि। सभ-सभसँ पुछिते छल। सभसँ आगा हीराबाबूक पुत्र छलाह-निरंजन। तेतरिक मृत्युक सभसँ बेसी अवसाद जेना हुनके भेल होनि। बूधन सेहो आबि गेल छलाह। तेतरिक ई दुर्दशा देखि हृदय क्षुब्ध छलनि। ताहुसँ बेसी क्षुब्ध छलाह निरंजनक ठेसीसँ “बाजू कि नहि बाजू?”

एक मोन कहनि जे चिकरि दिऐक। सभटा सत्य बात लोककेँ कहि दिऐक। दोसर मोन होनि-

“जै दियौ, जे भेलैक से भेलैक। पैघसँ अरारि नीक नहि होइत अछि।”

ताबतेमे ओ रिक्सा बला सेहो आबि गेल। ई दृश्य देखि

ओकरा नहि रहि भेलैक। ओ एकहि बेर, चिकरि उठल

- “पकड़। खूनी के पकड़।”

सभ केओ आश्चर्यचकित भए ओकरा दिस ताकि रहल छल। ओ हँफैत निरजनक गट्टा पकड़लक आ चिचिआ उठल-

“इएह थिक खूनी। पकड़ू, पकड़ैत जाउ एकरा।”

सभ कियो निरंजनकेँ घेरि लेलक। बूधन ई दृश्य देखि जान लए कए भगलाह जेना सभ हुनके खिहारने जाइत हो। ताबतेमे पुलिस सेहो आबैत छल। हिनका एहि तरहेँ भगैत देखि पुलिसकेँ सक भए गेलैक। बूधन आओर हरबरेलाह-

“खून... खून...।” बड़बड़ाए लगलाह। पुलिसबा धेलक हिनकर गट्टा। कनिके कालक बाद बूधन, निरसनमा-रिक्साबला ओ निरंजन थानामे बन्द छलाह। तेतरिक लास शवपरीक्षाणक हेतु मधुबनी रबाना कए देल गेल।

थानामे अपार भीड़ छल। केओ कहए निरंजन खूनी अछि, केओ कहए खून निरसनमा केलक आ केओ कहए जे नाहक एहि बेचारा सभकेँ फसाओल जा रहल अछि। थानाक आगामे भीड़ बढ़िते जा रहल छल। अंतमे दरोगाजी चिकरि उठलाह-

“क्या तमासा लगा रखा है? लाठी चलाओ ।”

तीन-चारिटा पुलिसबा दन-दन करैत लाठी लेने आगा बढ़ल। लोकक पड़ाहि लागि गेल। किछुए कालमे वातावरण एकदम शान्त छल। थानामे बँचि गेल छलाह- बूधन, निरसनमा ओ निरंजन। एतबेमे हीरा बाबू मधुबनी साइकलसँ पहुँचलाह। रस्तामे केओ-केओ हुनका किछु-किछु कहने छलखिन। ओ सोझे थाना

पहुँचलाह। साइकल रोकलाह। दरोगाजी नमस्कार केलखिन। हीराबाबू हुनका हाथ पकड़ने अन्दर गेलाह। पता नहि अन्दर की की गप्प भेलैक। किछु कालक बाद दुनू गोटे हँसैत-बजैत ओहिठामसँ बाहर गेलाह। दरोगाजी निरंजनक हाथ खोलि पीठ ठोकि देलखिन। तेतरि दिससँ निरंजन प्राथमिकी लिखओलनि जे ओ साँझमे फटफटियासँ घर वापस जाइत छलाह कि रिक्सापर बैसल बूधन अपन बगलमे बैसल तेतरिकेँ मधुबनीसँ अबैत दोसर फटफटियापर धकलि देलखिन। एहि तरहें बूधन, प्रमुख अपराधी भए गेलाह। संगे रिक्सा चालक निरसनमाकेँ अपराधमे सहयोग करबाक अभियोग लगाओल गेल। निरंजन सरकारी गवाह भेलाह। बूधन थरथर काँपि रहल छलाह। ताहिपर सँ पुलिस दनादन लाठी बजारने जा रहल छल-

“खून करने चला है, अभी पता लगता है आॅटा-चावल का भाव।”

सौंसे गाममे लोककेँ ठकबिदरो लागि गेल छलैक। बूधन खून केलाह। राम! राम! एहि बएसमे ई की? बूधन... निरसनमा... निरसनमा... बूधन... सौंसे गाममे चर्चक विषय बनि गेल।

दस बजे दोसर दिन दूटा सिपाही सभकेँ लदने-फदने मधुबनी विदा भेल। मजिस्ट्रेट जमानति नहि मंजूर केलक। बूधन निरसनमा जहल चल गेलाह। ■

3

बूधनक आर्थिक स्थिति कोनो तते खराब नहि छलनि। कहुना खाइत-पीबैत छलाह। बेस सज्जन लोक। डेढ़-दू बीघा जमीन छलनि। तीन-चारिटा महींस। किछु खेतक आमदनी, किछु माल-जालसँ। नीकसँ गुजर भए जाइत छलनि। मुदा खूनक मोकदमा परिवारक आर्थिक रीढ़ तोड़ि देलक। जमीनसभ बिका गेलैक मुदा ओ मोकदमा हारिते गेलाह। उच्च न्यायालयसँ सेहो जहल भए गेलनि। तकर बाद बूधन ओ निरसनमा आजन्म काराबास काटि रहल छलाह। घरपर चारिटा अनाथ बच्चाक एक मात्र सहारा छलखिन- बूधनक आंगनसँ। ओमहर निरंजन मोछपर हाथ फेरि रहल छलाह । एहि तरहें सौंसे गाममे गरीबी सूर्यास्तकालक छाया जकाँ बढ़िते जा रहल छल। तेतरि, बूधन सन-सन ओहिगाममे कतेको गोटे छलाह, मुदा सभ अपन-अपन भाग्यसँ समझौता कए लेने छलाह।

केओ गरीब,केओ धनीक, केओ छोटका,केओ बड़का सएह छल ओ गाम। एकदम संज्ञाशून्य, गतिशून्य, छल ओ गाम। बूधनक नेना नीरज, जे वाटसन इसकूलमे पढ़ैत छल, सभ समाचार सुनलक। एहि आफतसँ ओकर पढ़ाइपर बेस धक्का पड़लैक। सौंसे कुटुम्बसभसँ सम्पर्क केलक मुदा ओकर परिस्थितिपर ककरो ध्यान नहि गेलैक। गामपर छोट-छोट भाएसभ छलैक। एकटा सातमामे, दोसर पाँचमामे। दुनू भाएकेँ संगे राखए लागल। अपने एकटा पानक दोकानपर भोर-साँझ बैसए लागल। दिन-रातिक अथक

परिश्रमक ई क्रम वर्षो चललैक। गामपर माए ओ एकटा छोटका बहिनक गुजर कहुना कुटाउन-पिसाउन कए भए जाइत छलैक। मुदा तेतरिक परिवारकेँ लोक साफे बिसरि गेल। केओ कतहु किछु करए लगलैक तँ केओ कतहुँ। किछु दिनमे भाएक संगे छोटका बच्चा मामा गाम चल गेलैक। छेटगरसभ सहर भागि गेलैक। गाममे एहिना कतेको घर उजड़ैत रहल मुदा तीनू हबेली आबाद छल। बिआह, उपनयन, श्राद्ध सभ एहिना होइत रहैत छल। गामक गाम नोतल जाइत छल। छोटका लोकसभ अहिना मुँह तकैत रहैत छल। सभ भगवानक लीला, कहि लोक मोनकेँ मना लैत छल।

हीरा बाबूक कन्या शीला शनि-रविक गाम अबैत छलीह। तेतरिक दुर्घटनाबला सप्ताहमे सेहो ओ गाम आएल छलीह। सभटा गप्पकेँ नीक जकाँ बुझि गेल छलीह आ तेँ नीरजसँ ओकरा बड़ सहानुभुति छलैक। ओ पहिनेसँ ओकरा जानैत छल कारण नीरज बड़ प्रतिभाशाली छल मुदा ओहि दुर्घटनाक बाद शीलाक आकर्षण ओकरा प्रति बड्ड बढ़ि गेल छलैक। बाटसन इसकूलसँ थोड़बे आगा छैक कचहरी। ओही बीचमे रस्ताक बामाकात ओकर पानक दोकान छलैक। बेस चलैत छलैक। इसकूलिआ छौड़ासँ हाकिम तक जे केओ ओमहरसँ जाइत, ओतए पान अवश्य खाइत। साँझ-प्रात: शीला सेहो ओही दोकानक लग-पाससँ गुजरैत आ ओकरा देखि कए कहि नहि किएक नीरज सेहो हँसि दितैक। शीला सेहो हँसि दैत छलैक मुदा मोने-मोन ओकरा अपन पिताक क्रियापर पश्चाताप होमय लगैत छलैक। एक दिन शीलाकेँ नहि रहि गेलैक। नीरजकेँ असगरमे बजओलकैक-

"नीरज.! तूँ पढ़ैत किएक ने छें?"

“पढ़ैत छिऐक? प्राइभेटसँ मैट्रिकक परीक्षा देबैक।”

“से किएक? नाम फेरसँ किएक ने लिखा लैत छें?”

“तोरा तँ सभ बात बूझले छौक। घरक परिस्थिति जे ने कराबए।”

आओर अधिक गप्प करबाक साहस ओकरा नहि भेलैक। शीला अत्यन्त दुखित भए ओतएसँ अपन छात्रावास लौटल छल। इसकूलिआ छौंड़ा सभ नित्य शीलाकेँ ओहि पानक दोकान लग ठाढ़ होइत देखैत छलैक, अँखिअबैत छलैक। क्रमशः नानाप्रकारक चर्चा इसकूलमे होमए लागल । मुदा शीलाक लेल धनिसन। ■

4

गाममे निरंजनक प्रकोप बढ़िते गेल। हीराबाबूकेँ मात्र एकटा कन्या ओ एकटा बालक छलनि। बालकक बहुत रास दुलार भेलैक- स्वभाविके भेलैक, कारण बहुत रास कबुला-पातीक बाद ओकर जन्म भेल छलैक। असगर जानपर सए बीघा जमीन छलैक। फेर चिंता कथीक। पढ़ाइ-लिखाइमे मोन नहि लगलैक। तीन-चारि बेर मैट्रिकमे फेल केलक। मुदा तैं की। ओकरा कोनो बातक परबाह नहि छलैक। इसकूलक मास्टरसभ भोर-साँझ ओकरा ओहिठाम दरबार लगओने रहथि। ककरो किछु काज तँ ककरो किछु। बिआहक हेतु एकसँ एक घटक अबैत छलैक। पचास हजार रूपया तिलक, आ कहिने की-की बिदाइ सभ गछि कए ओकर बिआह बेस धनाढ्य घरमे निश्चित भेल। इलाकाक नामी लोकसभ बरिआती गेलाह।

ओमहर बिआह करबामे मूल उद्देश्य ओकरा सही रस्तापर आनब छल। किछु दिन तँ सचमुच ओ एकदम नीक लोक भए गेल। हीराबाबू शीघ्रे ओकर द्विरागमनो करा देलखिन। सालभरिक अन्दर ओकरा एकटा बेटी भेलैक। समयक संग ओकर मोन फेर परिवारसँ उचटए लगलैक। कलहसँ परिवारक वातावरण फेरसँ खराब होमए लगलैक। माता-पिता, स्त्रीसभसँ उठा-पटक होइत रहैत छलैक। कलहपूर्ण वातावरणसँ तंग भए ओकर स्त्री कैकबेर नैहर भगलैक। सभ बेर बुझा-सुझा कए माता-पिता सासुर पठा दैक। बेटीक घर तँ सासुरे होइत छैक। ओ बेचारी तंग छल। ने नहिरे बास ने ससुरे। तहन कतए जाइ..? कैकवर्ष ओ ओहिना दमघोंटू वातावरणमे संघर्ष करैत रहलि मुदा एक दिन ओकर मोन भरि गेलैक। ओ घर छोड़ि कए भगलि से भगले रहि गेलि । पता नहि कतए गेलि ? कैकदिन, कैकमास ओकर खोज पुछारी होइत रहलैक। कोनो खोज-खवरि नहि भेटलैक। एमहर निरंजन हालति दिन राति खराबे होइत गेलैक। गलत संगतिमे पड़ि कए ओ बहुतरास कुटेबक अभ्यस्त भए गेल । घरबालीक भगबाक कोनो शोक नहि- कनेक मनेक मुक्तिबोधे।

निरंजन (हीरा बाबूक एकलौता पुत्र)क स्थिति दिन-प्रतिदिन खराबे होइत गेल। जखन-तखन पितासँ झगड़ा होइते रहैत छलैक। प्रत्येक पाँच-सातदिनपर ओ पटना अवश्य जाइत। पता नहि ओतए की-की करए? तीन -चारि दिन रहैत आ फेर टाका घटलापर पिताक कंठपर सवार भए जाइत। गाममे कहैक जे ओ अगिला चुनाओमे टिकटक हेतु प्रयासमे लागल अछि। एहि प्रकारें ओ बहुत रास धनक अपव्यय करैत रहल।

हीरा बाबू की करथि? बेटेक लेल धन जमा करैत छलाह आ सएह बेटा फूकना भए गेल छलनि। बहुत दिन धरि ई क्रम जारी रहलैक आ एक दिन गाममे हल्ला भेलैक जे निरंजनकेँ पटनाक कोनो बड़ पैघ होटलमे केओ मारि देलकैक? हीराबाबूक घरक लोक बफारि पाड़ि रहल छल। चारि-पाँच गोटेसँ लोक ओकर खोज खवरि लेबए पटना पहुँचल। पटनामे हीरा बाबूक सार इन्डियन नेशनमे काज करैत छलखिन। मुदा हुनका एहि घटनाक कोनो सूचना नहि छलनि। किछु दिन पूर्व निरंजन हुनकासँ भेँट जरूर केने छलनि- महज औपचारिकतावश। निरंजनक स्वभाव हुनका नीक नहि लगैत छलनि। कैकबेर ओकरा बुझएबाक प्रयास सेहो केलखिन मुदा व्यर्थ। तकरा बादसँ ओ ओकरासँ बहुत कम सम्पर्क रखैत छलाह। मुदा एहि घटनाक समाचार सुनि ओ हतप्रभ छलाह। कैकदिन धरि सौंसे खोज-पुछारि कएल गेल मुदा कोनो पता नहि चललैक। केओ कहए किछु तँ केओ किछु। एमहर निरंजन भागल ओमहर ओकर घरबाली पहिने भागि गेल रहथिन। घरपर बस हीराबाबू दुनू बेकती। कहिओक बेटी मधुबनीसँ आबि जाइत छलखिन। निरंजनक शोकमे हीरा बाबू दिन-राति दुबर भेल जा रहल छलाह।■

5

हीरा बाबूक स्थिति क्रमशः गड़बड़ाइते गेलनि। टुटैत मोन, घटैत देह। जाड़क मास एक दिन ओ दुपहरियामे रौद तापि रहल छलाह कि एकाएक छातीमे दर्द उठलनि। जाबे-जाबे ककरो अबाज देथि ताबे आँखि बंद भए गेलनि । ओहीठाम पुआरपर पड़ल

सतरंजीपर टगि गेलाह से टगले रहि गेलाह। किछु कालक बाद बेटी खरिहानमे सँ धान लेबाक हेतु अएलीह तँ हिनका पड़ल देखि किछु अनसोहाँत तँ लगलैक मुदा भेलैक जे आलसमे पड़ल छथि। मुदा जखन साँझ पड़लोपर ओ नहि उठलाह तँ घरबालीकेँ चिंता बढ़लनि। ओ हुनकर देह पकड़ि कए हिलबए लगलखिन। हीराबाबूक देह चेरा जकाँ हीलि गेल। घरबाली ओहीठाम धरामसँ खसलीह। हीरा बाबूक आकस्मिक निधनक समाचार सौंसे गाम पसरि गेल। चारि-पाँच सए गोटे कठियारी गेल। भातिज आगि देलखिन। नीक जकाँ श्राद्ध सम्पन्न करबाक हेतु गामक प्रमुख-प्रमुख लोकक बैसार भेल आ हीराक आँगनबाली बेस उदारतासँ श्राद्ध कएलनि। पाँच गाम नोतल गेल। इलाकामे चारूकात यश पसरि गेल ।

आइ हीरा बाबूक मरला एक मास भए गेल छलनि। निरंजनक माए एसगरे बैसल छायाक ब्राह्मणभोजन करा रहल छलीह। एकाएक जेना ककरो अबाज बुझेलनि। आबि कए कहलकनि जे जानकी बाबू आबि कए बैसल छथि। हीराबाबूक आँगनसँ दरबाजा दिस गेलीह। जानकी बाबू एकटा दस्ताबेज देखबए लगलखिन जे कहाँ दिन हीराबाबू लिखने छलखिन आ कागतक हिसाबे हीराबाबूक ओतए बीस हजार रूपया कर्जा होइत छलनि। ई गप्प सुनिते ओ अबाक रहि गेलीह मुदा बजतथि की? घरक कारबार तँ सभ दिन ओ अपने करैत छलखिन। संबंधमे जानकी बाबू देओर लगैत छलखिन मुदा रूपयाक आगा कोन संबंध। जानकी बाबूक तगेदा डाकपर चलैत छलनि से हुनका बूझल छलनि। तथापि दू चारि दिनक समय लए कए पछबारिगामबाली तत्काल फुरसति पओलनि। जानकी बाबू सेहो

कहि ने की की सोचि चुप्पे चल जाइत रहलाह।

गाममे पंचैती होएब कोनो नव गप्प नहि छलैक। ओहि दिन जानकी बाबूक दरबाजापर लोक ठसाठस भरल छल। बहुत समयक बाद हुनका हीरा बाबूसँ ओलि सधएबाक मौका हाथमे आएल छलनि जकरा ओ व्यर्थ नहि जाए देबए चाहैत छलाह। गामक तमाम लोकक उपस्थितिमे ओ कागत बहार केलनि। कागज एकदम स्पष्ट छल। सभ पंच बीस हजार रूपया नहि तँ ओकर बदलामे पाँच बीघा जमीन जानकी बाबूकेँ देबाक निर्णय सुना देलनि। हीराबाबूक आंगनसँ किछु नहि बाजि सकलीह। केओ हुनकर गप्प सुनबाक हेतु तैयार नहि छलनि। जएह पंच सभक बलपर हीराबाबू राज करैत छलाह सएह पंच सभ हुनकर राजकेँ नष्ट करबाक हेतु कटिबद्ध बुझाइत छलाह। पछबारिगामबाली पंचक फैसला मानि लेलीह। आखिर रहबाक तँ ओही समाजमे छलनि। दोसर दिन भेने खेतक रजिस्ट्री भए गेल। साँझमे जानकी बाबूक ओतए सत्य नारायण भगवानक पूजा कएल गेल आ सभ पंचकेँ नोत देल गेलनि। ओमहर पछबारिगामबाली पेटकुनिआ देने छलीह आ बेटी जाँति रहल छलखिन। घरमे डिबिया करवनहु भुक दए इजोत तँ करवनहु साफे अन्हार करैत रहैत छल।

हीराबाबूक घरक स्थिति खराबे होइत गेलनि। जेहो जमीन रहनि सेहो बटाइ लागल। खेतीसँ उपजा सेहो बहुत कम होइत छलैक। बेटी सेहो बिआहक लेल तैयार छलनि। मदति केनिहार केओ नहि, समस्याक भरमार। शीला नीक जकाँ मैट्रिक पास केलक। द्वितीय श्रेणीमे नीक नम्बर प्राप्त भेल रहैक, मुदा नीरजकेँ ओकरोसँ नीक नम्बर अएलैक । बिहारमे पाँचम स्थान प्राप्त भेल

रहैक। जएह सुनैक दाँते आंगुर काटैक। गाममे बड़बड़ ललबबुआसभ परीक्षा देने छलाह, सभ लटकि गेलाह। जानकी बाबूक बालक- फेकन तेसर बेर लगातार मैट्रिकमे फेल कए गेल छल। नीरजक उपलब्धिक चर्च मास दिन धरि आस-पासक गाममे होइत रहलैक। मूल गप्प ई नहि छलैक जे ओ मैट्रिक पास कए गेल, असलमे लोक ओकर साहस ओ लगनसँ प्रभावित छल।

ओना, ओ अपन टोलक पहिल मैट्रिक छल। मुदा घरक परिस्थितिसँ मजबूर छल। बिआहक चर्च होइत रहैत छलैक, मुदा मूल बात टकापर बजरैत छलैक। अंततोगत्वा, ओकर बिआह पुरबारिगामक मोहनसँ ठीक भेलैक। ओ सी.एम. कालेजसँ बी.ए. पास केने छलाह। नौकरी नहि छलाह मुदा पी.सी.एस.क तैयारी करैत छलाह। चारि-पाँच बिघा जमीन छलनि। समय साल महग भए गेल छलैक। तैँ नहियो किछु तँ तीस हजार टका ओहि कन्यादानमे खर्च पड़ल आ दू-तीन बिघा जमीन ओहीमे गेल। खैर! जे भेल से भेल मुदा शीलाक माए निश्चिन्त तँ भए गेलीह। बेटीक बिआह दुरागमन सभ सम्पन्न भेल। रहल असगर पेट, कहुना भरिए जेतैक। खेत-पथार आब नाम मात्रक छलनि। जेहो छलनि से नीकसँ उपजैत नहि छलैक। पछबारिगामबाली किछु दिनक हेतु तँ नैहर चल गेलीह मुदा ओतहुँ नीक नहि लगलनि। माता-पिता मरि चुकल छलखिन। भाएसभक राज छलैक। सभ अपना-अपनामे लागल। आठ-दस दिन रहलीह। बड़ कोना दनि लगैत छलनि। केओ पुछनाहर नहि छलनि। मोने-मोन बड़ क्षुब्ध रहैत छलीह। जाहि भाए सभकेँ मासक मास अपना ओहिठाम राखि कतिका कटबैत छलाह तकरे सभक उपेक्षाभाव देखि बड़ उदास छलीह। मुदा समय वलबान होइत छैक। गाममे ककरोसँ भेँट करब उचित

नहि बुझाइत छलनि- लाज होनि। तथापि बूढ़-पुरान सभसँ भेँट कए प्रात: भेने अन्हरोखे सासुर बिदा भए गेलीह।

शीलाक माएक समय एहनो भए सकैत छनि से गाममे केओ सोचिओ नहि सकल छल। जाहिठाम अन्न-पानिक अम्वार छल ओहिघरमे आब भोजनोक अभाव। कालक प्रभावसँ के बँचल अछि। सएह सभ सोचि ओ समय काटि रहल छलीह। खादी भण्डारसँ अम्बर चर्खा आनि लेने छलीह। भरि दुपहरिआ चर्खा कटैत छलीह। शेष समय पूजा-पाठमे लगा दैत छलीह। बएसो पचपनसँ कम नहि छलनि। बड़काटा दलानपर असगर बैसल चर्खाकेँ गों-गों करैत रहैत छलीह। रस्तासँ अबैत-जाइत लोकसभ छगुन्तासँ एकबेर हुनका देखि लैत छल।

आइ दू दिनसँ शीलाक माए मरनासन्न पड़ल छलीह। गाममे ई गप्प कोनो कान सभकेँ खवरि भए गेल छलैक मुदा एकटा कौओ धरि हाल-चाल लेबए नहि अएलैक। ओ पड़ल-पड़ल कहि नहि करवन प्राण त्याग कए देलीह। घूटर काका ओही रस्तासँ जा रहल छलाह कि एकाएक हुनकर ध्यान हुनका पर गेलनि।

“शीलाक माए! शलाक माए!”

कहि नहि कैकबेर अबाज ओ लगओलक मुदा ओ टससँ मस नहि भेलखिन। कातमे चर्खा ओहिनाक ओहिना छल। घूटर काकाकेँ सक बढ़लनि। आठ बजेक समय किएक पड़ल छथि। कहीं विदा तँ ने भए गेलीह? डोला कए देखलकिन। सौंसे देह काठ जकाँ डोलि गेलनि। चिकरलाह-

“काकी नहि रहलीह.!”

ई समाचार सुनितहि सौंसे गामक लोक एकट्ठा भए गेल। के

आगि देत? ककरो कर्त्ता तँ नहि बना गेलखिन। बेटीक समाद गेलनि मुदा अखन धरि आएल नहि रहथिन। सासुरक लोक केओ गामपर नहि छलखिन से कहैत आदमी घुरि आएल छल। लास दू दिन धरि पड़ल रहल। अंतमे घूटर काकाकेँ नहि देखल गेलनि। सभकेँ गड़ियबैत पाँच बापे-पूते लासकेँ बुढ़िआ गाछी लए चललाह। पाछू लागल दसबीसटा लोक आरो संग भए गेलाह। एहि तरहें हुनक अन्तिम संस्कार संपन्न भेल।

तेसर दिन बाद बेटी गाम पहुँचलखिन। बड़ कनैत छलखिन मुदा हाथ एकदम खाली । घर बला बड़ कंजूस छलखिन। किछु दरेग नहि छलनि। साँझमे बैसार भेल। जानकी बाबू चिकरि उठलाह-

“तोरा लोकनिकेँ किछु विचार नहि छह। आखिर ककर घरबाली छलीह सेहो तँ सोचबाक चाही? कमसँ कम गाम लए कए तँ हेबेक चाही। की शीला? तोहर की विचार छौ?”

शीला की बजितए? असल गप्प तँ टकापर बजरैत छलैक। गौंआसभ हँ-मे-हँ मिला देलखिन आ जानकी बाबू सभटा खर्चा गछि लेलखिन। किएक ने? हिसाब-किताब कतहु भागल थोड़े जाइत छलैक।

श्राद्ध नीक जकाँ संपन्न भेल। तकर बाद शीला बाँचल-खुचल संपत्तिकेँ जानकी बाबूक नामे लिखि गामसँ प्रस्थान केलीह। जाहिठाम दिन-राति दस बीस गोटेक चौपाड़ि लागल रहैत छल सएह दरबाजा भम्ह पड़ि रहल छल। सौंसे गाम भोज खेलक आ सभ किछु बिसरि गेल। ■

6

ओमहर जीतन राय ओ जानकी बाबूक प्रतिद्वंदिता बढ़िते जा रहल छल। मुखियाक चुनाओ लग छलैक। अखन धरि जीतन रायक बोलबाला एहि महकमासभमे छलनि। मुदा एहिबेर स्थिति डमाडोल लगैत छल। जानकी बाबूक पुत्र जे तीन बेरसँ मैट्रिकमे फेल कए रहल छल राजनीतिक दंगलमे ताल ठोकि उतरि गेल छल। ओकर लठैत संगी सभ ओकर प्रवल समर्थक छलैक। मुखियाक हेतु ओ अपन नामांकन भरलक । संगे सरपंचक हेतु जीतन रायक भातिज हरखू रायकेँ ठाढ़ करओलक। वातावरणमे तनाव बढ़ल जा रहल छल। अखन धरि जीतन चुप छलाह मुदा नामांकन करबाक अंतिम दिन ओ अपने नामांकन कए देलाह संगे सरपंचक हेतु जीवनझाक नाम प्रस्तावित कएल गेल। जीवन झा बेस फँचारि लोक छलाह। कैकबेर जहलसँ भए आएल छलाह। हुनकासँ बेसी न्यायकर्त्ता के होइत?

चुनाओक सरगर्मी बढ़िते जा रहल छल। मुखिआक चुनाओ गामघरक हेतु प्रधानमंत्रीओक चुनाओसँ बेसी तनाव उत्पन्न करएबला होइत अछि। चुनाओ अबैत-अबैत कहि नहि कैक बेर झंझटि भेल। मुदा केओ चुनाओक मैदानसँ हटबाक हेतु तैयार नहि छल। चुनाओसँ दू दिन पहिने चौकपर लोकक भीड़ छल । एकाएक जीबनझा ओ जानकी बाबूक पुत्र मंगनूझामे बाताबाती भए गेलनि। बात बढ़िते गेल। दुनू दिसक लठैत जमा भए गेल। मंगनू ने आब देखलनि ने ताब। अपन रायफलसँ धराम-धराम

फायर केलाह । जीवन झा सहित कैकटा आओर लोक ओहिठाम धराशायी भए गेलाह।

हाटक दिन छलैक। बहुत लोक जमा छल । मुदा एहि घटनाक बाद लोकक पड़ाहि लागि गेल। थोड़बे कालमे पुलिसक जीप चौकपर आएल। संयोगसँ एस.पी. साहेब सेहो ओहीमे छलाह। मंगनू सहित सात गोटे आओर गिरफ्तार कएल गेलाह।

मुखिआक चुनाओ स्थगित भए गेल। दूतरफा खूनी केस चलल। बहुत दिनक बाद जानकी बाबू ओ जीतन राय सोझाँ-सोझी लड़ि रहल छलाह। जब्दी-कुर्कीक आज्ञा भए गेल छलैक। चारूकात गाममे पड़ाहि लागि गेल छल। सौंसे गाममे खाली स्त्रीगण ओ बच्चाटा नजरि अबैत। माल-जाल पर्यन्त लोक कतहुँ आन-आन ठाम बान्हि आएल छल। असल मारि तँ छलनि जानकी बाबू ओ जीतन रायक मध्य। मुदा ओहूसँ बेसी मारि अगड़ा-पिछड़ाक बीच भए गेल छल। घून संगे सातुओ पिसाइत अछि। जानकी बाबू ओ जीतन रायक पारस्परिक प्रतिद्वंदिताक कुपरिणाम सौंसे गाम भोगि रहल छल। थानेदारसँ लए कए एस.पी. धरि कहि ने के -के ओहि गाममे अबैत रहल। कैकगोटे पकड़ल गेल, कैकगोटे के नामे वारंट जारी छलैक। कुल मिला कए गाममे बहुत तनाव भए गेलैक।

सालभरि सेशनमे मोकदमा चललैक। मंगनूझाकेँ आजन्म काराबास सहित सात आओर आदमीकेँ जहल भेल। जानकी बाबूकेँ दस बर्षक सश्रम कारावास भेल। रायजी निर्दोष घोषित भेलाह। एहि फैसलासँ गाममे किछु गोटेक घरमे भोजन नहि बनल। दोसर दिस रायजीक समर्थक सभ फटाका छोड़ि रहल

छलाह। फटाकाक अबाजक संगे कतेक आदमीक छाती फाटि रहल छल। खूनी मोकदमा कोनो नेना भुटकाक खेल तँ होइत नहि अछि। जानकी बाबूक आर्थिक स्थिति साफे लचारि गेल छल। ओमहर रायजीकेँ सेहो जबरदस्त धक्का पड़ल । मुदा हुनका विजयक संतोष छलनि। दुश्मनकेँ छका देबाक आत्मतुष्टि। मुदा उजड़ि दुनू रहल छलाह। ताहि बातक आभास नहि होइत छलनि से बात नहि मुदा बहुत देरी भए गेल छल। जेना-तेना टाकाक व्यवस्था कए उच्च न्यायालयमे अपील कएल गेल। गामक झगड़ा पटना पहुँचि गेल। मुखिआक चुनाओ कहि नहि की की रंग लाओत? ओमहर गामक अधिसंख्य लोक अपन रोजी-रोटीक जोगारमे लागल रहैत छल। गरीबहाक नेनासभमे पढ़बाक अभिरूचि बढ़ल जा रहल छलैक।

उच्च न्यायालयमे अपीलक बाद जहल गेल लोकसभ छुटि कए गाम आएल। सभक मुँहपर फिफड़ी पड़ैत रहैक । सभ अनिश्चित भविष्यक भयसँ आक्रान्त छल। हाईकोर्टमे जिरह पर जिरह भेल। साल भरि मोकदमा चलल। मुदा न्यायाधीश अपराधी सभकेँ दोषमुक्त करबाक पक्षमे एकदम सहमति नहि भए रहल छल। रायजी जी-जानसँ मामिलाक पैरबी कए रहल छलाह। धन गेल, धर्म गेल, प्रतिष्ठा गेल- आब प्राय: प्राणो जाएत, सएह सभ सोचि रहल छलाह- जानकी बाबू। जाहि दिन फैसला भेलैक ओहि दिन सभ केओ महाबीरजीकेँ नीकसँ सुमरि कए न्यायालय पहुँचलाह। ठीकदस बजे फैसला सुनाओल गेल। सभक सजा बहाल राखल गेल । मात्र जानकी बाबूक जहलक समय बढ़ाकए आजन्म कराबासमे परिणत कए देल गेल छल। सभ मुजरिमकेँ पकड़ि पुलिस अन्दर केलक। मित्र ओ संबंधीसभ दुखीभावसँ घर

वापस भए गेलाह। रायजीक ग्रूपमे बेस उत्सव मनाओंल गेल। सत्यनारायण भबानक पूजा भेल ओ पुवरिआ पोखरिपर अष्टयाम सेहो कएल गेल।

एहि तरहें गामक दूटा महाशक्तिक घरमे धसना धसि चुकल छल। जाहि आदमीक नामसँ लोक कपैत छल सएह सभ आब गाममे उपेक्षाक पात्र बनि गेल छल। जएह सएह खिधांस करैत छलैक। रायजीक हालत सेहो लचरि गेल छलनि मुदा अखनो धरि कहुनाक इज्जति बचा रहल छलाह। बहुत रास टका ओहि खुनी मोकदमामे खर्च भए गेल रहनि। संगहि जानकी बाबूक परिवारक दुरावस्था देखिक करवनहुँक पश्चाताप सेहो होनि। मोकदमाक चक्करमे आओर गोरखधंधा गड़बड़ा गेल छलनि। पुरना वी.डी.ओ.क बदली भए चुकल छलैक आ नवका वी.डी.ओ बड़ सख्त छलैक। किछु ककरो नहि सुनैत छलैक। ठीकेदारी भेटि नहि रहल छलनि। अस्तु, चारूकात अन्हरिये अन्हरिया देखा रहल छलनि की करी? कतए जाइ? असमंजसमे दिन-राति समय काटि रहल छलाह। ■

7

गामक किछु छौंड़ा सभ क्रान्तिकारी भए गेल छल। संगहि आरो-आरो लोककेँ चढ़बैत रहैत छल। रायजी सरकारी रासनक दोकान करैत छलाह। तीन पंचायतक सभटा कोटा हुनके ओतए अबैत छलैक। एकबेर गाम अबैत-अबैत सामान निपत्ता भए गेलैक। ई गप्प नवतुरियाकेँ पता लगलैक। ओ सभ रायजीक पाछा पड़ि गेल। एहन काज रायजी कैक बेर पहिनहु कए चुकल रहथि ।

मुदा गामक हवा बदलि रहल छलैक। सभकेँ अपन-अपन अधिकारक प्रति चेष्टा बढ़ि रहल छलैक। बी.डी.ओ.क ओतए सिकाइति कएल गेल। बी.डी.ओ. साहेब दोकानपर धाबा देलनि आ दोकानक कागज-पत्रकेँ सील कए देलनि। जाँच-पड़ताल भेल आ आरोप सही पाओल गेल। रायजीपर मोकदमा चलल। सभ छौड़ा सरकारी गबाह भेल। ओना अपना भरि जजकेँ प्रभावित करबाक ओ पूरा प्रयास केलनि मुदा ओ जज मानलकनि नहि। सालभरिक जहल ओ दू हजार रूपया जुर्माना भेलनि। रायजी अत्यन्त दुखी भावसँ जेलक रस्ता पकड़लनि। चूँकि ओ सरेआम पकड़ा गेल छलाह। अस्तु, अपीलो केलापर छुटबाक कोनो संभावना नहि छलनि।

एहि तरहें एक एकक गामक तीनू मजगूतगर खाम खसि रहल छल। ओकरा कतहुँ आओर प्रश्रय लेबाक प्रयोजन छलैक। पता नहि कहिआसँ ई गाम अहिना उत्थान-पतन देखि रहल छल। जखन जे बढ़ि जाइत छल तकरे चला-चलती भए जाइत छलैक। ओकरे पाछा सगरे गाम भए जाइत छल।

कोनो प्रकारक क्रिया-प्रतिक्रिया नहि। पता नहि कहिआसँ ओ गाम ओहिना-क-ओहिना छल। चार-पर-चार सटल। आगामे नान्हिटा दलान। कनिकटा बाड़ी आ चारपर नाना प्रकारक तीमन तरकारीक लत्ती- झिमनी, सजमनि, कदिमा, कुमहर आदि-आदि। उघारे देहे घुमैत नान्हिटा नेना भुटका। फाँड़ बन्हने गिरहथसभ कोदारि नेने खेत दिस दौगैत। केओ कथुलेल बेहाल केओ कथुलेल। गुअरटोली, कोरिआनी ओ बभनटोली कतहु जाउ एकहि वृतान्त। ई छल ओहि गामक पूर्ण वृतान्त। ओहि घटनाक घटल

एक युग भए गेल छलैक मुदा तैओ लोकसभ ई गप्प-सप्प बिसरि नहि सकल छल।

पन्द्रह अगस्त ओ छब्बीस जनवरीक गामक मिडिल इसकूलमे धाजा फहराइत छलैक। संगे सरस्वतीपूजा सेहो मनाएल जाइत छलैक। इसकूलिआ छौंड़ा सभ इनकिलाब, जिन्दाबाद चिचिआइत भोरे-भोर सौंसे प्रभात फेरी लगबितए। गामोक लोकसभ रमजनमा, हरिआ, मोती, टुनटुनमा सभ एक पाँतिसँ इसकूलपर जमा होइत- झंडा फहरावक काल। हेडमास्टर एकदम बगुला सन उज्जर धोती पहिरने झंडा फहरा दितए आ नेना सभ गीत-नाद गबैत गामोक लोकसभ बुनिआ-सेबै खाइत-खाइत गाम चलि जाइत। अपनामे गप्प-सप्प करैत-

“रौ! ई मस्टरबा बड़ निमन लोक हइ। जहिआसँ अलौह तहिआसँ झंडा जरूर फहरबै हौ आ बुनिओ बटाइत हो। अहिसँ पहिलुका मास्टर तँ बड़ बैमान छलौ। बुनिओक टाका मारि दै छलै।”

गप्प करैत हाथ चटैत अपन-अपन खोपड़ीमे चल जाइत। बस एतबे माने बूझल छलैक एकरा सभकेँ स्वतंत्रतासँ । बुनिया बटैत तँ नीक आ जे सेहो नहि भेल तँ अधलाह।

ओना, भोटो कैकबेर भेलैक। पहिल-दू चुनाओमे तँ इलाकाक नामी जमींदार झिंगुर बाबू- नवटोलक- जितैत रहलाह। तकर बाद आओर कैकटा नेता सभ बनैत गेल। नवटोलमे जमींदार-सभक सभ दिन चला-चलती रहैक। जकरे पाबै तकरे लतिआ दैक। केओ बाबू साहेब सभक विरोधमे नहि बजैत। बजैत तँ भोगैत। कोट-कचहरी, हाकिम थाना सभ मुट्ठीमे बान्हल छलैक। मुदा

नवतुरिआपर एकर प्रतिक्रिया तँ भइओ रहल छलैक। तकर साक्षात प्रमाण रायजी छलाह। सपनोमे नहि सोचि सकल होएताह जे हुनको ई गति भए सकैत छलनि। नथुनी राउतक बेटा देबू, झिंगुर बाबूसँ टक्कर लेबाक निर्णय केलक। चुनाओक समय नजदीक छलैक। गाम-गाम साइकिलसँ दौरए लागल। रातिक गुप-चुप बैसार होइक। सभ पिछड़ा एक भए जो। ई चौकीपर ठाढ़ भए कए देबू राय गरजैत छल-

"हमको नया जमाना लाना है।"

गामक बूढ़-पुरान सभकेँ छगुन्ता लगैत छलैक। भगतै भगतकेँ चिकरैत ओ सभ देखने छलैक मुदा नेतासभ एना चिकरतै तकर अन्दाज ओकरा सभकेँ नहि छलैक। गुअरटोली ओ अमतटोलीक लोक सभकेँ नेताजीक गप्प सभ सुनि-सुनि छगुन्ता लगैत छलैक। बड़ काबिल निकललै नथुनीक बेटा। ओहिबेरक चुनाओमे देबू भारी बहुमतसँ विजय घोषित भेलाह। झिंगुर बाबूक गढ़ टुटि गेल छल। समय-समयक गप्प छलैक।

गामक लोकसभ एहि संक्रमण सँ गुजरि रहल छल। मुदा परिवर्तनक क्रम शिथिल छलैक। नेता सभ अबैत छलैक, चल जाइत छलैक। भाषण, बेस गरमा-गरम होइत छलैक। मुदा ततबे धरि। सभ अपना-अपनामे लागल छल। कहिआ कतए तेतरि मरलाह। बूधन भाइक जहलसँ निकलबाक समय लगचिआएल छलनि। लोक हुनका सभकेँ बिसरि जकाँ गेल छल। एतबहिमे गाममे नीरजक पुररागमन भेल। ■

8

मैट्रिकक परीक्षामे नीरजकेँ बड़ नीक नम्बर आएल छलैक। सरकार 150 रूपया प्रतिमास छात्रवृत्ति देबाक घोषणा केलक संगे छात्रावासमे नि:शुल्क रहबाक व्यवस्था सेहो भए गेलैक। दू-तीनटा ट्यूसन सेहो भेटलैक। एतबा आमदनीसँ ओ पूरा परिवारक खर्च आसानीसँ चला लैत छल। इन्टरक परीक्षा सेहो नीक जकाँ ओ पास केलक आ कानपुरक इंजीनियरिंग कालेजमे ओकर नामांकन भए गेलैक। ओतहुँ ओकर भाग्यक जोर ओहिना रहलैक। विश्विवद्यालयमे प्रथम स्थान प्राप्त करबाक बाद ओकरा तुरंत नौकरी सेहो भेटि गेलैक- पटनामे। चारि हजार मासिक दरमाहा संगहि आओर-आओर सुविधा। आर्यावर्तमे मुख्यपृष्ठपर ओकर फोटो छापल गेलैक। सर्वत्र एहि बातक सोर भए गेल मुदा ओकर गाममे एकर कोनो चर्च नहि। चर्च ओहि दिन भेलैक जहन एक युगक बाद ओ अपन पैतृक भूमि वापस आएल। चौकपर रिक्सासँ उतरलाक बाद ओ अकचका कए गाम दिस तकलक। तीनू मलिकानक घर लचरल-उजरल। थोड़ेकाल तँ ओकरा सक भेलैक जे कहीं दोसर गाम तँ नहि आबि गेलहुँ। दू डेग आगा बढ़ल कि बूधन भाइ नजरि अएलखिन- बूढ़ाएल,पतराएल- लाठी नेने टुटलाही चश्मा पहिरने। बूधन भाइ नीरजकेँ नहि चिन्हि सकलखिन। मुदा नीरज चिन्हि गेलनि। तुरंत प्रणाम केलकनि । “हमरा चिन्हलहुँ काका? हम छी नीरज, तेतरिक बालक।”

बूधनकेँ खुसी ओ आश्चर्यसँ बकार नहि फुटलनि।

गाममे केओ नीरजकेँ नहि चिन्हि सकलैक। 9 वर्षक बाद

ओ गाम आएल छल। गामसँ भागल तँ धरिआ पहिरने छल। गाम वापस आएल तँ सूट- बूट पहिरने बेस धरवगर, रमनगर व्यक्तित्वक लोक लगैत छल।

गाममे बड़का-बड़काक बड़ेरी सरकि रहल छलैक। नव आकांक्षा, नवीन आशासँ युक्त एकटा मध्यम वर्गक सूर्योदय भए रहल छलैक। अगल-बगलक गाममे कैकटा हाकिम भए चुकल छल। जहाँ-तहाँ इसकूल कालेज खुजि रहल छल। नीरजकेँ ई गप्प-सप्प बूझल रहै। मुदा ओहि गामक लोककेँ किछु पता नहि छलैक। नित्य भोरे उठैत। खेत-पथार देखैत। बोनि करैत। धाकल ठेहिआएल घर वापस अबैत, खाइत-पीबैत, साँझ होइत घर धरैत। नित्य इएह दिनचर्या। कतए की भेलैक तकर कोनो खोज-पुछारी नहि। मुदा नीरजकेँ गामक लोकक ई जड़ता बड़ अखरलैक। कैकदिन ओ इएह सभ सोच-विचारमे लागल रहल। कोनो रस्ता सुझैत नहि छलैक। गामक लोक केओ सुनबाक लेल तैयार नहि छलैक।

नीरज बैसए बला लोक नहि छल। ओ चाहैत तँ अपन समय आरामसँ बिता सकैत छल। नौकरी भेटिए गेल छलैक। गाम उजड़िये गेल छलैक। मुदा नहि, ई होइतैक पलायन। वास्तविकतासँ फराकक एकटा उपलब्धि जे ओकर अस्तित्वकेँ सहरक चकाचौंधमे आत्मसात कए लितैक। ओ चोट्टे नेताजी माने देबन रायसँ भेँट केलक।

देबन ओकरा देखि बड़ प्रसन्न भेलाह। यद्यपि ओ विरोधी पार्टीक सदस्य छलाह तथापि सरकारमे हुनका बेस प्रभाव छलनि। नीरज अपन गामक हाल-चाल नेताजीकेँ कहलकनि। ओ ओकर

विचारसँ प्रभावित छलाह। सरकारसँ पर्याप्त सहयोग दियाबक आश्वासन देलखिन। ओमहर गाम आबि नीरज एकटा बैसार केलाह ओ नेताजीकेँ ओहिमे बजाओल गेल। बदलल सामाजिक परिवेश ओ ताहिमे ओकर सभक दायित्वपर नेताजीक मर्मान्तक भाषण भेल। सभसँ पहिने नीरज अपन विचार रखलनि। गौंआसभकेँ हुनक बात सुनि-सुनि ठकविदरो लागि गेल छलैक। तकरबाद गामक किछु नवतुरिआ सभ अपन-अपन बात कहलक। अन्तमे नेताजी ठाढ़ भेलाह। थपड़ीसँ सौंसे मैदान गुंजित भए रहल छल।

"इनकिलाब!"

नेताजी कहलखिन आ लोक सभ कहलकैक-

"जिन्दाबाद!"

"भाइ लोकनि.!

बहुत खुसीक बात थिक जे हमरा लोकनिक बीच नीरज बाबू सन मेधावी व्यक्ति उपस्थित छथि आ हमरा लोकनिक मार्गदर्शन करए चाहैत छथि। जाहि प्रकारक परिस्थितिक सामना कए ई आगा बढ़लाह अछि से अहाँ सभसँ नुकाएल नहि अछि। ई समाजक सामनेमे एकटा दृष्टान्त छथि। हिनका देखि कए ई बुझा जाइत अछि जे आदमीमे अनन्त शक्ति होइत छैक। शक्ति जे परिस्थितिसँ, समस्यासँ लड़बाक साहस दैत छैक। अहाँ सभमे ओ शक्ति अछि। मुदा अहाँ सभ अपनाकेँ चिन्हि नहि रहल छी। हम आइ सएह कहि रहल छी जे अहाँ अपना आपकेँ चिन्हू। (जनता दिससँ अवाज-

"दूवर्षसँ तँ अहूँ एम.एल.ए. छी नेताजी। मुदा कहाँ किछु देखि रहल छी। खाली भाषणेटा नहि चाही।"

“शान्त रहू। हम ओही बातपर आबि रहल छी। जहिआसँ हम अहाँक प्रतिनिधिक रूपमे पटना पहुँचलहुँ हम दिन-राति अही लोकनिक चिंतामे लागल छी।”

जनता दिससँ अबाज-

“झूठ बात अछि। अहाँ अपन कोठा बनबएमे लागल छी।”

“ठीक कहलहुं। हम कोठा जरूर बना रहल छी मुदा हम घोषणा करैत छी जे ओहि कोठामे हम नहि रहब। ओहि कोठामे इसकूल खुजतैक। गामक गरीबक बच्चा सभ ओहिठाम पढ़तैक। आउ! सभ केओ दृढ़ निश्चय करू जे हमसभ मिलि कए गामकेँ, बदलि कए रहब।”

जनता दिससँ अबाज-

“अहाँ अहिना भाषणकक चलि जाएब। एहिठाम लोकक पेट जरैत छैक। बच्चाकेँ सकूल के पठाओत?”

“एकदम सही बात अहाँ कहलहुं अछि। जाधरि पेट नहि भरतैक ताधरि आओर किछु नहि फुरा सकैत अछि। हम सरकारसँ गप्प कए रहल छी। निकट भविष्यमे एहि इलाकामे एकटा फैक्ट्री खुजत। ओहिमे अहाँसभकेँ नौकरी करबाक पर्याप्त अवसर भेटत।”

थपड़ीक गड़गड़ाहटसँ वातावरण चहकि उठल। एकबेर फेर नेताजी कहलखिन-

“इनकिलाव...!”

ताहिपर जनता बाजल-

“जिन्दावाद।” ■

9

बैसार समाप्त भए गेलैक। बहुत रास बात गामक लोकसभ बुझबो नहि केलकै। सभ स्त्रीगणसभ अपनामे बतिआइ-

"गे दाई.! आइ तँ लोडीपीकरमे बड़ भोकरा-भोकरी होइत रहै। बलुसे बड़की गो नेता सभ आइल रहै।"

मुदा जे कनिको बुझनिक रहैक माने घूटरकाका, बूधनभाइ, सन-सन लोक बड़ खुस। नेताजी कहलकैक तँ एक लाखक गप्प। सभसँ बेसी खुसी तँ भेलैक नीरजकेँ। गाम अएनाइ ओकरा सार्थक बुझाए लगलैक। दस हजार रूपया ओ अपना तरफसँ चंदा देलक। मास-दू-मासक अंदरमे वरहमपुरासँ एकमाइल उत्तर एकटा बहुत नीक विद्यालयक स्थापना भेल। नेताजी अपन घोषणापर अड़ल रहि गेलाह। अपन नवका मकान इसकूलमे दान कए देलखिन। संगे 20 हजार रूपया सेहो दान देलखिन। विद्यालयमे उत्तम पढ़ाइ होइक ताहि हेतु संभव प्रयास भेल। निर्धन तथा अनाथ बच्चाकेँ नि:शुल्क पढ़ाइक व्यवस्था सेहो कएल गेल। विद्यालयक प्रधानाचार्य सहित अन्य शिक्षक लोकनिकेँ नीक दरमाहापर नियुक्ति कएल गेल। से सभ सभटा भेल मुदा इसकूलक हेतु विद्यार्थी नहि जुटि रहल छल। गाममे अधिसंख्य लोक भोर खाइत छल तँ साँझक हेतु झखैत छल आ साँझमे खाइत छल तँ भोरक हेतु झखैत छल। सभगोटे मिलि कए कमाइत छल तँ पेट चलैत छलैक। नेनासभ जतए-ततए चरबाहीमे छलैक। सभटा छोड़ि इसकूल कोना पठबितैक। मुदा नेताजीक बात सभक मोनमे गरि गेल छलैक। सभ मोने-मोन अछता-पछता जरूर रहल छल।

मालिकसभ से बिगड़ैत छलैक- “जन-बनिहार छै आ जन-बनिहार जकाँ रह।” छोटका मोटका गिरहथसभ ओहिना गरजै ओकरा सभपर- “कहि नहि ई देबुआकेँ की फुरेलैक? बबूरक गाछमे आम कतएसँ फरत? “जीवो जीवस्य भक्षणम्” बला गप्प छलैक। तीनू महाशक्ति विनाश तँ भेलैक मुदा रक्तबीज जकाँ सर्वत्र व्याप्त शोषक प्रवृत्तिक विनाश बाँकीए छलैक।

गामक इसकूल प्रारम्भ भए गेल। शुरूमे बेसी बच्चा बभनटोलिएक छलैक मुदा क्रमश: कोरियानी, गुअरटोली आ आन-आन गामक नेना सभ सहो आबए लागल। इसकूल दिससँ सभकेँ मध्याह्न भोजनक नि:शुल्क व्यवस्था कएल गेल छल। अस्तु, परिवारक लोककेँ एक साँझक भोजनोक उसास भेलैक। कैकटा बच्चा नाम लिखओलाक । दू-चारि दिनक बाद इसकूल अएनाइ छोड़ि देलकैक। हेडमास्टर साहेब स्वयं ओहि विद्यार्थी सभक घर गेलाह। ओकर सभक परिवारक लोककेँ बुझओलखिन। ओही क्रममे ओ रमजनिओक घर गेलाह। किछु-किछु गप्प शुरूए केने छलाह कि तावतेमे रमजनिआक गिरहथ बमकैत आबि गेलखिन। “रमजनिआक कोनो ठेकान नहि। आइ कैकदिनसँ एकर छौड़ा घुरिओ कए नहि आएल।” हेडमास्टर साहेब पुछलखिन-“ एकरासँ कथी अपराध भेल?” गिरहथ तुरंत चिकरि उठलाह- “औ बाबू! की कहल जाए! कहि नहि केहन जमाना आबि गेल। छौड़ाक तरी तीन मोन धान आ दस कट्ठा जमीन एकरा देलिऐक। सभ पचा गेलि । आइ चारि दिन भेल ,एकर छौड़ो कतए दनि धसकि गेल।”

हेड मास्टर साहेब गम्भीर ओ शान्त स्वरमे कहलखिन-

“एहिमे कोन गलती भेलैक। नान्हिटा छौड़ा पढ़ाइ-लिखाइ

छोड़ि कए चरबाही करए से कोन नीक बात होइत?”

एतबे बात ओ बेचारे बाजल होएताह कि रमजनिआक गिरहथ चिकरि उठलाह-

“तोहर ई औकात जे हमर जनकेँ भरकेबैं? खबरदार! जे आगासँ एहन काज फेर भेल ।”

मास्टर साहेब शान्तिप्रिय लोक छलाह मुदा हुनका ई गप्प साफे अनरगल लगलनि। ओ बाजि उठलाह-

“अहाँक चिकरब एकदम अनुचित थिक। ओकर बेटा छैक आ अपन बेटाक भविष्य बनएबाक अधिकार ओकरा छैक।”

एतबा बात ओ बजले छलाह कि धैले लाठी बजरलनि कपारपर। मास्टर साहेब ओहीठाम चितंग भए गेलाह। सौंसे गाममे एहि बातक हल्ला भए गेल। मास्टर साहेबक एहि दुर्गतिपर सौंसे गुअरटोली, कोरिआनी ओ बभनटोलीक बेसी लोक बड़ दुखी छल। साँझमे गाममे बैसार भेल आ ई निर्णय भेल जे हमरा लोकनि अपन अपन बच्चाकेँ इसकूल अवश्य पठायब, चाहे ओहि लेल जे भए जाए। संगे मास्टरक ऊपर आक्रमण केनिहार लोक सभकेँ सामाजिक बहिष्कार करबाक निर्णय सेहो लेल गेल। टुनटुन गिरहथक पानि, जन सभ बन्द।

तेसर दिन फेर नेताजी गाममे अएलाह। मास्टरक ऊपर आक्रमण ओ इसकूलमे विद्यार्थी सभक सहित गामक आओर-आन समस्यासभसँ अवगत भेलाह। गामक समाचार सुनि एक क्षण तँ ओ अबाक रहि गेलाह। “एना किएक भेलैक?” मुदा ओ कोनो आनठामक तँ छलाह नहि। समाजक परिस्थितिसँ पूर्ण अवगत छलाह। साँझमे इसकूलक मैदानमे फेर बैसारक आयोजन भेल ।

बैसारकेँ संवोधित करैत नेताजी बजलाह-

"भाइ लोकनि! आजुक बैसार हमरा लोकनिक संघर्षक इतिहासमे अमर रहत। आइ हमरा एहि संकल्पकेँ दोहरएबाक अछि जे समाजक वर्तमान व्यवस्थाकेँ बदलि कए रहब। एहिसँ बड़का अन्याय की अछि जे नान्हिटा बच्चा इसकूल ओ खेल छोड़ि कए महींषक पीठपर दूटा ऐंठ रोटीक हेतु बौआइत रहैत अछि। ई अन्याय हमरा सभकेँ आब बरदास नहि अछि। हम सभ आब एकर विरोध करब। ताहि हेतु पहिल आवश्यकता अछि अर्थक्रान्तिक। जा धरि हमरा लोकनि आर्थिक रूपसँ पराबलंबित रहब, ता धरि समाज हमर शोषण करत। आउ, आइ हमसभ निश्चय करी जे समाजक वर्तमान दोषपूर्ण व्यवस्थाकेँ बदलि कए एकरा नवजीवन प्रदान कए कए रहब।"

जनता दिससँ अबाज-

"अवश्य, अवश्य।"

नेताजी कहलखिन-

"इनकिलाव.!"

ओ लोकसभ कहलकैक-

"जिंदावाद.!!" ■

10

नीरज अपन नौकरीपर वापस चल गेल छल मुदा ओकर ध्यान सदिखन गामे रहैत छलैक। गामक समाजकेँ बदलबाक अदम्य इच्छा ओकरा सतति परेसान केने रहैत छलैक। एहि बीच गाममे जे किछु घटित भेल छलैक तकर जानकारी ओकरा छलैक। एक दिन अचानक ओ कारसँ जा रहल छल कि रिक्सापर शीला जाइत नजरि अएलैक। कार रोकलक। सत्ते ओएह छलैक। "कतेक परिवर्तन भए गेल छलैक ओकरामे।"- नीरज सोचि रहल छल ।

"शीला! की हाल?"

प्राय: शीला नहि चिन्हि सकलैक- "के?"

"हम नीरज?"

"एहन भए गेल नीरज?" - शीलाक मोनमे एक हजार प्रश्न उठए लगलैक। नीरजक मोनमे बहुत रास जिज्ञासा छलैक ओकरा प्रति। शीला एहिठाम की कए रहल अछि? कोना अछि? मुदा संकोचवश पुछि नहि सकलैक।

शीला एसगरे छलि ओ ओकर संगे छलैक बहुत रास किताब। नीरज ओकरा अपना कारमे बैसा कए डेरापर लए अनलकैक। कहि नहि कतेक काल धरि ओ सभ गप्प-सप्प करैत रहल। फेर शीला एकाएक उठलि आ अपने डेरा दिस बिदा भए गेलि । नीरज नहि रोकि सकलैक। साँझ पड़ि रहल छलैक। करवनो-करवनो झीसी सेहो पड़ि रहल छल । । डेराक पता तँ दए गेल छलैक। "फेर भेँट करब"-से कहि ओ चलि गेलैक।

नीरज कतेक काल धरि ओकरे बारेमे सोचैत रहि गेल।

ओही समयमे डाकिया चिट्ठी दए गेलैक। उत्सुकतासँ ओ पत्र खोललक। गामसँ आएल छलैक। इसकूल खुजलाक बाद नित्य किछु-ने-किछु होइत छलैक। ओहि दिन हेडमास्टरकेँ मारि लागि गेलाक बादो मामिला शान्त नहि भेलैक। बाभनसभ अपन धिआ-पुताकेँ ओहि सकूल पठेनाइ बन्द कए देने रहैक। कारण ओहि इसकूलमे छोटाक लोकसभक नेना सभ सेहो पढ़ैत छलैक।

असलमे गामक व्यवस्था ततेक जड़ छलैक जे कोनो प्रकारक परिवर्तन ओकरा नीक नहि लगैत छलैक। मुदा परिवर्तन तँ करवनो अनने आबि सकैत अछि। ताहि हेतु ककरो आगू बढ़ए पड़तैक। नीरज सएह सभ सोचि रहल छल कि एकाएक शीला रिक्सापरसँ उतरलैक।

“के?”

“हम शीला?”

“आउ, आउ! नीक छी ने?”

शीला चुप्प।

कतेक काल धरि चुप्प रहैत? शीलाक बिआहक बाद आइ धरि कतेक प्रकारक संक्रमणसँ गुजरए पड़ल छलैक। सभ बात मोनमे घुमि रहल छलैक । ओकर गुम्मीकेँ तोड़ैत नीरज पुछलकै-

“अहिठाम कोना अएलहुँ?”

“अहींसँ भेंट करए।”

“एसगरे?”

“दोसर के अबैत? सौंसे जिनगी असगर अछि।”

“से किएक?”

शीला चुप्प रहि गेलीह। नीरजकेँ भेलैक जेना कोनो गलती भए गेल होइक। शीला अत्यन्त शांन्त ओ विनम्र भावसँ अपन गप्प कहए लगलैक। कोना-कोना ओकरा सासुरक लोकसभ तंग करैत छलैक- कोना ओकर घरबाला आन-आन स्त्रीगणक पाछा अपसियांत रहैत छलैक। सदिखन, भांग पीने, आँखि लाल टरेस केने। कोना एक दिन तंग भए कए रातिमे ओ गामसँ भागलि आ ओहि सहरमे पहुँचलि। आइ ओहि घटनाक कमसँ कम तीन वर्ष भए गेलैक।

“कोना बीतल तीन वर्ष?”

“बीत गेलैक। जहन आदमी अबधारिए लैत अछि तँ किछु कए लैत अछि। मैट्रिक तोरे संगे पास केलहुँ। जहिआसँ एहि सहरमे पैर धेलहुँ किछु करबाक जेना जहनि भए गेल। आइ.ए.. क परीक्षा प्राइभेटसँ देलियैक। प्रथम श्रेणी भेल। तकर बाद आओर आगा पढ़बाक उत्साह भेल। असगर पेट छल। ट्यूशन भेट जाइत छल। ओहीमे सँ टाका बचाकए किताब, काँपी आ फीसोक टाकाक ओरिआन करए पड़ैत छल। एहि प्रकारें बी.ए. पास कएल आ संप्रति एकटा पब्लिक इसकूलक प्राचार्या छी। पाँच सए टका दरमाहा दैत अछि। हमर इसकूलमे पाँचमा धरि पढ़ाइ होइत छैक।”

नीरज ओकर गप्प सुनि कए आश्चर्यचकित भए गेलैक। बाजल-

“हमरा पूरा विश्वास छल शीला जे तूँ किछु जरूर करबैं। तोहर रंग-ढंग शुरूएसँ क्रान्तिकारी छलौक। आब हमरो खिस्सा सुनिये

ले।”

“बूझल अछि। सभटा बूझल अछि।”

“कोना?”

“अखबारमे तोहर फोटो निकलल रहैक ने? इजिंनयरींगमे फस्ट केने रही? ओही अखवारमे तोहर संक्षिप्त जीवन वृतान्तो बहार भेल रहौक।”

“ठीके।” नीरज सोचमे पड़ि गेल। ओकर फोटो, ओकर जीवन वृतान्त अखवारमे छपल जरूर छलैक, मुदा ओहि गामक केओ गोटे ओकरा नहि पढ़ने रहैक आ जँ केओ पढ़नहुँ हेतैक तँ ईष्यासँ कतहु बजलकैक नहि। मुदा शीलाक ओकरा प्रति स्नेह अक्षुण्ण छलैक। ओ ओहि समाचारकेँ पढ़ि अत्यधिक प्रसन्न भेल रहए आ कहि ने मोने-मोन की-की सेचि लेने रहए।

दुनू गोटेकेँ अपन-अपन काजपर जएबाक समय भए रहल छलैक।

“अच्छा नीरज। अखन चलैत छी । फेर भेँट होएत। कहिओ हमरो डेरा दिस आबी?

“अवश्य आएब।

आ शीला रिक्सापर चढ़ि अपन इसकूल दिस बिदा भए गेलि।■

11

नीरज ओ शीलाक भेँट-घांट होइत रहैत छलैक। भेँट भेलासँ दुनूक मोन प्रफुल्लित भए जाइत छलैक। अतीतक सुखद स्मृति मोन पड़ि जाइत छलैक। नीरज एकटा मामुली आदमीक बेटा शीला एकटा भूतपूर्व जमीनदारक एकलौता बेटी । मुदा एतेक समयक अन्तरालसँ दुनू गोटे फेर एक ठाम पहुँचि गेल । संघर्षक सांध्यबेलामे दूटा विजयी व्यक्तित्वक सुखद मिलनक अनुपम क्षण छल ।

नीरजकेँ अखन धरि शीलाक संघर्षकथा नहि बूझल छलैक। तेँ ओकर अतीतक प्रति ओकर जिज्ञासा बढ़िते जा रहल छलैक। मुदा ओकरा शीलासँ किछु पुछबाक साहस नहि भए रहल छलैक। बिना पुछने बनि नहि रहल छलैक। आ एक दिन ओ पुछिए देलकैक- "शीला, अहाँ एहिठाम असगरि किएक छी?"

"ककरा संगे रही?"

"से किएक? घरबला कतए छथि?"

शीला किछु नहि बजलैक। ओकर आँखिसँ भादवक मेघ जकाँ नोरक धार बहि रहल छलैक। नीरजकेँ भेलैक जेना ओ बड़ पैघ गलती कए गेल हो। फेर शीलाकेँ बुझबए लगलैक। यद्यपि शीला अनवरत संघर्षसँ दृढ़ ओ कर्मठ भए गेल छलि। मुदा भावुकता ओकरामे अखनहुँ विद्यमान छलैक। कनैत-कनैत ओ जेबीसँ एकटा फोटो निकालि कए नीरजक हाथमे देलकैक । नीरज ओहि फोटोकेँ देखि गुम्म रहि गेल।

तकर बाद शीला एकहुँ क्षण ओहिठाम नहि रहि सकलैक। कनैत-कनैत ओकर आँखि लाल भए गेल छलैक। कहि नहि अपन कोन-कोन व्यथाकेँ ओ अश्रुपातसँ निर्गत कए रहल छल। ओ चाहे बाहर आएल, रिक्सा केलक आ डेरा पहुँच गेलि। शीलाक चलि गेलाक बाद नीरज एकटक ओहि फोटोकेँ देखिते रहि गेल। ओ फोटो नीरजकेँ अतीतक दिस तकबाक हेतु बाध्य कए देलकैक। नीरज ओ शीलाक संयुक्त चित्र आ पाछामे मोहर- स्टुडियो चित्रहार मधुबनी।

“नीरज! तूँ बड़ कष्टमे बुझाइत छैं।” शीला कहलकैक। नीरज चुप्प।

“अच्छा सुन। हम गामसँ बहुत रास चीज सभ अनैत छी। जरूरतसँ ज्यादा। तोरा जँ बेजै नहि लगौक तँ ओहिमे सँ थोड़बोक राखि लेल कर।

नीरज मानि गेल रहैक। आ एक बेर तँ शीला ओकरा बहुत रास टाका सेहो देने रहैक। पूरे एक हजार रूपया छलैक। ओही टाकासँ नीरज मैट्रिकक फार्म भरने छल आ बहुत रास आओर-आओर जरूरी काज केने छल। शीला ई ककरो नहि कहने छलैक मुदा नीरज ओकर उपकार नहि बिसरि सकल छलैक। सितम्वरक महिनामे प्री-टेस्टक परीक्षाक बाद फार्म भरबाक रहैक। शीला फोटो खिचएबाक हेतु स्टुडिओ गेल दल। संयोगवश नीरज सेहो पाछासँ ओहीकाजक हेतु पहुँच गेल। नेनमति छलैक आ संगे-संगे फोटो खिचएबाक हेतु शीलाक आग्रह ओ मानि गेलैक।

ई संपूर्ण घटना एकाएक ओकर दिमागमे नाचि गेलैक । शीला अखन धरि ओहि फोटोकेँ ओतेक स्नेहसँ रखने छलि ।

ओकरा मोनमे शीलाक प्रति जिज्ञासा बढ़ले जा रहल छलैक मुदा जखन करवनो ओ सामनेमे अबैत छलैक किछु पुछबाक साहस नहि होइत छलैक।

शीलाक जीवनक्रम जेना एकटा रहस्य छलैक। ने ओ किछु कहैत छलैक आ ने नीरज किछु पुछि पबैत छलैक। एहि तरहें तीनमास समय गुजरि गेलैक। ओहि दिन फोटो दए कए शीला फेर वापस नहि आएल रहैक। कहि नहि की भेलैक? नीरजक चिंता बढ़ल जा रहल छलैक। ■

12

सात दिन धरि नीरज शीलाक बाट तकलकै मुदा शीला घुरि नहि आएलि।

"की बात भेलैक?"

नीरजकैं बड़ चिंता भए गेलैक। ओहि दिन साँझमे ओ शीलाक डेरा दिस विदा भेल। डेरा पहुँचल तँ पता लगलैक जे शीला ओहिठामसँ जा चुकल अछि। नीरजकैं जबरदस्त धक्का लगलैक। ताबतेमे मकान मालिकिन अएलैक आओर पूछ-ताछ करए लगलैक। 'नीरज'क नाम सुनिते ओ अंदर गेल आ एकटा चिट्ठी ओकरा हाथमे राखि देलकैक। नीरज चिट्ठी लए उदास मोन लौटि गेल। डेरा आबि ओ चिट्ठी लिफाफासँ निकाललक आ ओकरा पढ़ए लागलि-

"प्रिय नीरज!

जहिआसँ तोरासँ भेँट भेल- मोनमे एकटा उसास भए गेल छल। कखनोक मोन होइत छल जे सभ बात तोरा कहिऔक। अपन मोन हल्लुक करबाक कोनो आन साधन नहि बुझाइत छल। मुदा किछु बाजि नहि होइत छल। बाजबाक प्रयास करितहि आँखिसँ नोरक धार बहि कए ओकरा बाधित कए दैत छल। ओहि दिन तोरा ओहिठाम ई सोचि कए गेल रही जे सभटा बात कहि देबौक। मुदा से नहि भेल। तेँ एकमात्र स्मृति चिंह तोरा समर्पित कए हम लौटि गेल रही। आइ कैकदिनसँ मोन कोना दनि कए रहल अछि। आब ई सहर जेना काटए दौड़ि रहल अछि। हमरा संगे तोरो परेसानी भए रहल छौ । से नीक बात नहि अछि । तेँ हम एहिठामसँ जा रहल छी। गलती माफ करिहेँ।

तोहर

शीला”

नीरज गम्भीर सोच विचारमे पड़ि गेल। शीलाक जीवन यात्रा एकटा रहस्य बनि कए रहि गेल छलैक। कहि नहि ओ कतए चलि गेलि? की हमर कोनो बात ओकरा बेजाए तँ नहि लागि गेलैक? शीला कहाँ गेलि? शीला किएक गेलि? की शीला फेर घुरि नहि आओत? इएह सभ सोचैत-सोचैत कहि नहि ओ कखन सुति रहल?

नीरज शीलाकेँ नीक जकाँ बिसरि गेल छल। ताहि बातकेँ बिसरलो एक युग भए गेल छल। मुदा कहि नहि कहाँसँ ओ फेर प्रकट भए गेलि आ ओहिसँ पहिने कि ओकरा शीलाक संघर्ष यात्राक स्पष्ट आभास ओकरा होइतैक शीला एकबेर फेर ओकर स्मृतिसँ बिलीन भए रहल छलैक।

भोरे उठि ओ दरबाजापर घुमिए रहल छल कि डाकिया

एकटा तार दए गेलैक-

“हेडमास्टर कील्ड, कम एटवन्स–नेताजी ।”

नीरज गुम रहि गेलाह। गाममे एकबेर फेर आगि लागि गेल छलैक। नीरज सबेर-सकाल आफिस पहुँचल। छुट्टी लेलेक आ पहिल गाड़ीसँ गामक हेतु प्रस्थान कए देलक।

रस्तामे बरौनी जं.क लग मास्टरक छोट भाए भेटलखिन। सीमरिआमे मास्टर साहेबक भष्मावशेष प्रवाह करए आएल छलखिन। “कहऽ बौआ, एहिठाम कोना?” आओर ओ ठोह पारि कए कानए लगलैक। ट्रेनमे दुनू गोटे संगे-संगे प्रस्थान केलथिन। गामक वृतान्त सुनैत-सुनैत नीरजकेँ रोमांच भए रहल छलैक। गाममे बभनटोली ओ गुअरटोली तथा कोरिआनीक बीचमे जबरदस्त मारि-पीट भए गेलैक। छोटका जातिक धिआ-पुता सभकेँ पढ़ैत-लिखैत देखैत बभनटोलीमे बेस चर्च भेल। निरसू बाबू ओहि दिन तकैत-तकैत इसकूल धरि आएल छलाह। अपन चरबाहकेँ इसकूलमे लिखना लिखैत देखि तामस भेलनि। ओ छौड़ा गबड़-गबड़ मुँह तकैत छल। निरसू बाबू फेर गरजलाह। एतबेमे हेडमास्टर बाहर भेल। ओ किछु कहिओ नहि सकल छल कि निरसू बाबू ओकर ब्रम्हाण्ड फोरि देलखिन। मास्टर साहेबकेँ उठा-पुठा कए अस्पताल लए गेल मुदा ओ बँचि नहि सकलाह।

साँझ होइत-होइत गाममे पुलिस करमान लागि गेल। लोककेँ पराइत बाट नहि सुझाइत छलैक। नेताजीकेँ सेहो ई गप्प दरभंगामे केओ कहलकनि। ओ चोट्टे गाम घुरलाह। मधुबनी टीसनपर नीरज ओ नेताजी एकहि गाड़ीसँ उतरलाह। नीरजकेँ देखि नेताजीक जानमे जान आबि गेलनि।

"कहू नीरजजी की हाल?"

"कथीक हाल? अपन हाल तँ ठीके अछि मुदा सुनल अछि जे गाममे बड़ झंझटि भेल अछि।""

"सएह हमहूँ सुनलहुँ अछि। ई सभ लगैत अछि प्रण कए लेने अछि जे नहि सुधरब।"

"सुधरतैक। कनेक धैर्य राखू। ई सभटा सुधारेक पूर्व सन्धया छैक। अन्हरिआमे दम नहि होइत छैक, दम इजोतमे होइत छैक जकर आगमनसँ अन्हरिआ स्वत: समाप्त भए जाइत छैक।"

"आखिर एना भए किएक रहल छैक। पहिल हमरा लोकनि सोचि कए जे तीनू महाशक्तिए गामक शोषण कए रहल अछि मुदा आब तँ ओहो समाप्ते प्राय छथि। तथापि जेना विभेद बढ़िते जा रहल हो। नित्य कथु ने कथुले मारि, मोकदमा जेना खेल तमासा होइक।" -तमाकुल चुनबैत कहलकैक नेताजी।

इएहसभ गप्प- सप्प करैत ओ सभ गाम आबि गेलाह। सौंसे गाम भम्ह पड़ि रहल छल। हेडमास्टरक चिताग्नि धह-धह जरि रहल छल । सौंसे इसकूलकेँ पुलिस घेरि लेने छल।

से सभ देखि नीरज अत्यन्त दुखी भए गेल। मोने-मोन होमय लगलैक जे इसकूल खोलि प्राय: ओ बड़ पैघ गलती कए गेल। हेडमास्टरक सही मानेमे हत्यारा जेना ओएह हो। ओ तुरंत मास्टर साहेबक चिता लग गेल। दू मिनट धरि गुम रहि कहि ने की सोचलक आ इसकूलक अगुआरमे चुप-चाप बैसि गेल।

एहि दुर्घटनासँ नीरज बड़ा उदास ओ दुखी छल। ओकर समस्त प्रयास पर तुषारापात भए रहल छलैक। केओ अपन बच्चाकेँ इसकूल पठएबाक हेतु तैयार नहि भए रहल छलैक। गाममे खूनी

मोकदमा सेहो भए गेल छलैक। नीरजक मोन आगा-पाछा कए रहल छलैक। की ओ अपन प्रयास छोड़ि दिअए? की ई गाम अहिना सबदिन दरिद्रता, अज्ञानता ओ वैमनस्यताक सिकार रहत? एक युगसँ ओहि गामक लोकसभ एही प्रकारक जीवन-यापन करबाक हेतु अभ्यस्त भए गेल छल। परिवर्तनक इच्छा आकांक्षा जेना मरि गेल छल। नीरज एहि बात सभपर कैकदिन धरि सोचैत रहि गेल। अंततोगत्वा, ओ निर्णयपर पहुँचि गेल। जे ओ नौकरी छोड़ि देत।

एतेक परिश्रमसँ अर्जित सुख ओ स्मृद्धिकेँ देखैत-देखैत ओ लात मारि कए गाममे वापस आबि गेल। सौंसे गाममे एहि बातक दिनचर्या होइत रहलैक। नेताजी सेहो एहि गप्पकेँ सुनलाह। ओ नीरजकेँ धन्यवाद देबाक हेतु इसकूलपर एकटा बैसारकेर आयोजन केलक।

बैसारमे गाम भरिक लोक ठसाठस भरल छल। नीरजक सभसँ पहिने भेल बाजल-

“भाइ लोकनि.!

गामक परिस्थितिसँ अहाँ सभ गोटे पूर्ण परिचित छी। जा धरि अशिक्षा रहत, ताधरि गाममे गरीबी रहत। गामक भविष्य गामेक लोक बना सकैत अछि। केओ बाहरी आदमी, कलक्टर, कमिश्नर गामक भाग्य बिधाता नहि भए सकैत अछि। गाममे परिवर्तनक हेतु हमरा लोकनि जे थोड़ेक प्रयास कएल से ठहरि गेल अछि। मुदा ताहिसँ अगुतेबाक,परेसान हेबाक नहि चाही। नीक काजमे व्यवधान होइते छैक। तेँ हेतु आजुक बैसारमे हमरा लोकनिकेँ किछु गम्भीर निर्णय लेबाक अछि। पहिल बात जे गामक झगड़ा गाममे तय होएत। जे मोकदमा भए गेल अछि से वापस भए

जाएत आ भविष्यमे एहन घटनाक पुनरावृत्ति नहि होएत। दोसर बात जे सभ घरसँ पढ़एबला बच्चाकेँ इसकूल पठाओल जाएत। इसकूलक खर्चा गामक लोकसभ वापसमे मिलि कए देल करबैक। ताहि हेतु सरकारपर अवलंबित नहि रहब।

तेसर बात जे गाममे आब कोनो भेद-विभेद नहि रहत। जातिक परहेज नहि रहत। सभ केओ एक दोसर ओहिठाम खाएत-खेलाएत। (बभनटोलीक किछु वृद्ध लोकनि कहलखिन-

"अन्तिम प्रस्ताव मंजूर नहि अछि। जाति तँ भगवानक घरसँ बनि कए अबैत छैक।"

भगबानक घरसँ बहुत किछु बनि कए अबैत छैक। सभक सोनित लाल, सभक संग समान नैसर्गिक आवश्यकता रहैत छैक मुदा हमरा लोकनि स्वयं स्वार्थक हेतु विभेदमे जीबाक हेतु अभ्यस्त भए गेल छी। आउ, हमरा लोकनि दृढ़ निश्चय करी जे हम अपन गामकेँ बदलि कए रहब। अहिठाम केओ राजा, केओ रंक नहि हेतैक। सभक बेटाक मुंडनमे ढोल बजतैक। सभक पुतहु बाइज्जत सासुर बसतैक।"

थपड़ीक गड़गड़ाहटिसँ सौंसे मैदान गुंजित भए रहल छल। एक क्षणक लेल एहन बुझेलैक जेना सौंसे गामक कायाकल्प भए गेल होइक। गामक बूढ़ पूरान, बच्चा, जबान सभ प्रभावित छल नीरजक व्यक्तित्वसँ। मुदा ई समस्याक समाधान नहि छलैक। गाममे बैसार तँ कहिआसँ भए रहल छलैक। चुनाओ अबिते भदबरिआ बेंग जकाँ नेता सभ गामे-गामे टर-टर करए लगैत छलैक मुदा तकर बाद सभकिछु ओहिना-क-ओहिना। ■

13

गामक पछबरिआ सीमानपर छलैक सुगनीक घर। तीनटा बेटा छलैक- मुँगवा, नेगरा आ हरिआ। तीनू चरबाही करैत छलैक। घरक काज सम्हारि कए सुगनी मालिक सभक धिआ-पुताकेँ खेलबैत छल। घरबला कलकत्तामे काज करैत छलैक। बेस उरन-फुरन छलैक। गामसँ जाइत काल कहि ने की की सपथ खाइत छलैक मुदा कलकत्ता जाइते सभ बिसरि जाइत छलैक। तारी पीबाक जन्मजात अभ्यास छलैक। जे टाका कमाइ छल से पीबि जाइत छल। घरक कोनो सुधि नहि रहैत छलैक। धनकेँ सुगिआ जे बेटा सभकेँ पोसलकैक। सभस जेठका आब दस वर्षक छलैक। सुगिआ तेँ तिरपित रहैत छल। आब ओकर दुख थोड़बे दिनमे बिला जेतैक। अखन तँ तीनू बच्चा सभ अपन-अपन पेटे पोसैत छलैक मुदा कनिक आओर छेटगर हेतैक तँ मायोक ध्यान तँ करबे करतैक। अखन तँ ओहो कमाए रहल छलि। पेट भरिए जाइत छलैक।

साँझमे बैसारमे हल्ला सुनि ओहो कनीकाल ठार भए गेल रहै। कहि ने बाबू भैया सभ की की बजैत छलैक। कनिक काल ओकरा खुसी से सोचि कए भेलैक जे प्राय: फेर भोँट आबि गेलैक। पछिला भोँटमे पाँचगो रूपया देने रहैक चुल्हा छाप बला। बड़ खुस भेल रहए सुगिआ। दौगल-दौगल गेलैक आ मोहर लगा कए सोझे हाटपर चल गेल रहैक। ओहि दिन भरि पेट भाए-बेटा सभ केओ खेने रहैक। ओकरा सएह बात मोन पड़ि गेलैक।

भोर भेने पछबरिगामबालीक ओहिठाम नेरकम करए गेल

रहैक तँ पुछि बैसलैक-

“कथीक बैसार रहैक मालकिनी। भोँट होतै की? बड़ नीमन होइ छै भोँट। एकौ साँझक जोगार तँ हेबे करतैक?”

“नहि गे। भोँट नहि छै। ई तँ इसकूलमे बच्चा सभकेँ पढ़ौनी करबाक बैसार रहैक।” – गिरहथनी कहलखिन ।

“दु जै दिअ। जेहो पेट भरै है सेहो नहि होब देत ई सभ। बज्र खसौ औ इसकूलपर।”

सुगिआक तीनू बेटा तीन रंग छलैक। माता-पितापर केओ नहि आएल छलैक। सभक रंग बेदरंग। मुदा ताहिसँ की? एक जमानासँ तीनटा गिरहथ ओ धेने अछि। तीनू बेटा तीनू गरिहथक ओहिठाम चरबाहीपर छलैक। गिरहथक बेटा सभ ओहि इसकूलमे नाम लिखा लेने छलैक। मुदा लाख बुझओलापर सुगिआ नहि मानलकैक।

“अपन बेटा सभकेँ चरबाही छोड़ा हम बिल्टा दू। है कियो अहि गाममे जे हमरा सभकेँ रोजी-रोटीक ओरिआन करत। धनके मालिक जे पेटो भरैहै।” -सुगिआ कहलकैक नीरजकेँ।

नीरजकेँ गाममे कतेक सुगिआसँ एहने सबालक सामना करए पड़ैत छलैक। के सुनितैक ओकर बात?सभक पेट जरैत छलैक। पढ़ाइ आ भविष्यक निर्माणक ककरा फुरसति छलैक।

नीरजकेँ गाममे घुमैत देखि कैकगोटे कैरंग गप्प करैत छलैक। उमेश बाबूक दरबाजा लग चारि-पाँचटा युवक बैसल गप्प कए रहल छलाह। नीरजकेँ अबैत देखि कटाक्ष करैत कहलखिन- “नीरज भाइ! अहूँ व्यर्थ प्रयासमे लागल छी। अहाँकेँ सपने देखबाक छल तँ असगरेमे सपनइतहुँ किंवा आइ काल्हिक विद्वान जकाँ

बैसल-बैसल आरामसँ एकसँ-एक लेख लिखतहुँ। अहूँक करम लगइत अछि अहाँकेँ खिहारि मारि रहल अछि।"

हुनका लोकनिक व्यंगात्मक गप्प सभकेँ अनठवैत ओ आगा बढ़ले छलाह कि पाछासँ जेना केओ बजओलकनि-

"नीरज!"

नीरज घुमलाह तँ देखैत छथि हरखू भाइ।

"कह भाइ की हाल छौक?"

"नीके। बहुत दिनसँ किछु गप्प करबाक छल।"

"हँ, हँ, कह ने।"

तोहर बाबूक नामे किछु लहना छैक। कह तँ एक दिन बैसक हिसाब कए ली। ■

14

नीरजकेँ हरखूक गप्प गड़ि गेलैक। ओ ओकरा अपना ओहिठाम बजओलकैक। हरखू दौड़ल अएलाह। संगमे झिंगुर काका सेहो छलखिन। झिंगुर काका ओहि लेन-देनक गवाह छलाह। 300 टका तेतरि लेने छलखिन। तकर सूदि-दर-सूदि जोड़ैत-जोड़ैत भए गेलैक 15 हजार। नीरजक संगमे टाका छलनि जरूर मुदा ओ एहि तरहेँ अपव्यय नहि करैत छलाह। ओ साफे कहलखिन जे तीन सए रूपया कर्जक बेसी-सँ-बेसी छह सए टका हम देब। जँ अहाँक विचार हो तँ हिसाब-किताब साफ कए लिअह

अन्यथा अहाँक मर्जी।

“सुनह हौ झिंगुर काका। आइ काल्हिक छौंड़ा सभकेँ कनिको विचार नहि रहि गेलैक अछि। की करी, की बाजी! पिताक कर्जा उतारताह से तँ पारे नहि लागि रहल छनि आ चललाहेँ गामेकेँ सुधारए।” - कहि ने ओ की की बजैत गेल?

नीरजकेँ ई अनुचित बात नहि सहि भेलैक। ओ चिकरि उठल-

“की बजैत छी? होसमे गप्प करू। तीन सए रूपयाक पन्द्रह हजार मंगैत लाजो नहि होइत अछि।”

नीरजक ई गप्प सुनि हरखूक देहमे आगि लागि गेलनि। ओ गरजैत-फरजैत ओहिठामसँ वापस भेलाह-

“अच्छा! देख लेबौ तोरो। केहन-केहन गेलाह तँ मोछबला अएलाह।”

हरखू बेस लगारी लोक छलाह संगे ग्रामीण समस्याक नीक अनुभव छलनि। पचासटा रूपया छिड़िआ दिअ आ कैकटा लाठी अहाँक संगे घुमए लागत। चारि-पाँचटा लठैत सदिखन संगे रहैत छलनि। मुदा जहिआसँ नीरज गाममे प्रवेश केने छल, गामक वातावरणे गड़बड़ा गेल छलैक। लहना तगाता सभ बन्द जकाँ भए गेल छलैक। सभसँ बेसी कष्ट ओकरा ताही बातक छलैक। कैकटा नवका धनीक सभ माथ सुगवुगा रहल छलैक। कैकटा खोपड़ी फेर उजरए चाहैत छलैक। नीरज ताहिमे बाधक बनि रहल छलैक। हरखू सोचलक जे सभसँ जरूरी छल नीरजकेँ ठीक करब। तेँ ओ तगेदो केने छलैक।

साँझमे घूरतर अगल-बगलक तमाम लोकसभ उपस्थित

होइत छलाह। नाना प्रकारक गप्प-सप्प होइत रहैत छल। नीरज आ हरखूक चर्चा ओहि राति सभ घूरतर भेल। केओ कहैक हरखूक गलती छनि। केओ कहैक गलती नीरजेकेँ छनि। उल्टे कर्जो खेने छथिन आ सीनाजोरी कए रहल छथिन। गाम-घरमे कर्जा खा कए केओ एना आइ धरि नहि ढहकैत छल । सएह सभ लोक गप्प-सप्प कए रहल छल कि पुवारिकातसँ बड़ जोर हल्ला भेलैक। लोकसभ दौड़ल। छोटका-बड़का सभ प्रकारक लोकक नीरजक ओहिठाम मेला लागि गेल छलैक। हरखू पाँच-छहटा लठैतक संगे तारी पीने नीरजक ओहिठाम अंट-संट बाजि रहल छलैक। नीरज रोकि रहल छलैक मुदा ओ सभ मानि नहि रहल छलैक । तावतेमे नीरजक समर्थक सभ सेहो आबि गेलाह।

रातुक समय छलैक हल्लाक अबाज गाम-गाम धरि पहुँचि गेलैक। अगल-बगलक टोलक लोकसभ सहो दौड़ि आएल। हरखू ओ ओकर समर्थक सभ नीरजकेँ जे-से कहने जा रहल छलैक । तावतमे किछु गोटे बचाओ करए लगलाह। आखिर मामिला जेना-तेना शांत भेलैक।

प्रात: काल सौंसे गाम एही बातक चर्चा रहैक। जकरा जे मोन होइक से बजैत छल। हरखूक बेटासभ अपन समर्थकक संख्या बढ़एबाक प्रयासमे तल्लीन छलाह। नीरजक पितिऔतकेँ फोड़ि चौकपर जिलेबी खुआ ओकरा अपना पक्षमे कए लेलाह। संगे गामक सरपंचसँ से किछु लए दए कए गप्प तय भए गेलैक। चारूकात नीरजक विरोधमे वातावरण तैयार कएल जा रहल छल। समस्या कर्जा सधएबाक नहि छलैक समस्या छलैक अन्यायक प्रति दण्डवत हेबाक। से बात नीरजक आत्मा नहि मानि रहल छलैक।■

15

तीन वर्षक बाद शीला एकबेर फेर पटनासँ वापस अपन सासुर आएलि। एतेक समयमे ओ गाम बहुत बदलि गेल रहैक। ओकर सासुरमे एकटा कोठा बनि गेल रहैक जे फटकिएसँ नजरिमे आबि रहल छलैक। विजली लागि गेल छलैक आ गाम धरि पीच सड़क छलैक। रिक्सासँ सोझे मोहन बाबूक दरबाजापर उतरल। रिक्सा बला घंटी टनटनओलकैक । शीलाक ससुर, पितिआ ससुर आ एकटा गामक आओर केओ लोक बैसल भांग घोंटि रहल छलाह। घंटीक अबाज सुनि कए दरबाजापरसँ केओ बाजि उठलाह-

"के?"

शीला बाजि उठलीह- "हम छी- शक्तिपुरबाली।"

आ ओ बिना किछु जबाब देने आंगन दिस बढ़ि गेलीह।

चारूकात पक्का घर छलैक। बीच आंगनमे कुर्सीपर मोहन बाबू बैसल छलाह। एकाएक शीलाकेँ बीच आंगनमे देखि चौंकि उठलाह। लग-पासक घरसँ स्त्रीगणसभ सेहो आबि गेलैक।

"के छी?"

"हम छी शक्तिपुरबाली।"

"के शक्तिपुरबाली?"

"के शक्तिपुरबाली.?" –जोरसँ पुछलकैक मोहन बाबू।

"अहाँक घरबाली- शक्तिपुरबाली।"

"अच्छा! आब बुझलिएक। बहुत दिनपर मोन पड़लहुँ।

एतबा गप्प मोहन बाजले छल कि ओकर माए साक्षात दुर्गा सन रूप बना कए हनहनाइत अएलैक आ शीलाक गालपर चाटी जमा देलकैक।

"भाग निर्लज्जिआ.! अहिठाम तोरा फेर पैर रखबाक साहस कोना भेलौक?"

शीला चिकरि उठलि- "खबरदार! जे फेर हाथ उठेलहुँ। ई हमर घर थिक आ हम एहिठाम स्वेच्छासँ आएल छी आ जखन फेर इच्छा होएत तखने वापस जाएब सेहो बुझि लिअ।"

शीलाक ठोस ओ स्पष्ट अबाज सुनि ओ गुम्म पड़ि गेलि। आगा किछु बजबाक साहस नहि भेलैक। आंगनक कोनटा लगसँ ससुर सभ सभटा गप्प सुनि रहल छलाह।

मोहन बाबू चुप्पे दरबाजापर चल गेलाह आ शीला असोरापर राखल कुर्सीपर जा कए बैसि रहलीह।

शीलाक बिआहक समयमे ओकर सासुरक स्थिति कोनो ततेक नीक नहि छलैक। कहुनाक गुजर भए जाइक। खपरैल घर छलैक। घरबला बी.ए. पासे केने छलखिन आ नौकरीक ताकमे छलखिन। शीला अपनो कोनो बड़ पढ़ल नहि छलि। मुदा गाम-घरमे स्त्रीगणमे मैट्रिको पास करब एकटा उपलब्धि छलैक। घरक परिस्थिति देखि ओ दरबजेपर एकटा बच्चाक इसकूल खोललक । ओहिमे ओहिमे गामक किछु बच्चासभ पढ़ैत छलैक। ओहिसँ जे किछु आमदनी होइक से घरमे दए दैक। घरक लोककेँ ई गप्प बड़ नीक लगैक।

जँ जँ दिन बितैत गेलैक तँ तँ ओकरा मोहनजीक बारेमे कैकगोटे कैकरंगक गप्प-सप्प कहैत रहैत छलैक। ओ अनठा दैत

छलैक किंवा ध्याने नहि दैक कि नहि देबए चाहैक। मुदा एक दिन जे ओ देखलक से ओकर आँखि खोलि देबाक हेतु पर्याप्त छलैक। शीलाकेँ एकाएक देखि खवसिनी उठि बैसलि । मोहनजी अकचका गेलाह। शीला आगा बढ़लि, खवासिनीक गट्टा पकड़लक आ घिसिअबैत बाहर कए देलक। आंगनमे केओ छलैक नहि। सभ स्त्रीगण सोमवारी पूजए गेल छलि।

खवासिनी इएह-ले ओएह-ले भागलि । तकर बाद मोहनजी ओ शीलामे जबरदस्त झंझटि भेलनि । मोहनजीक पुरुषार्थ जाग्रत भए गेल छलनि। शीलाकेँ प्रताड़ित कए आंगनसँ बहरा गेलाह।

मोहनजीक आचरण सुधरक बजाए बिगड़िते गेलनि। जकर प्रतिक्रिया शीलोपर भेलनि। सरकार दिससँ मधुबनीमे हस्तकला केन्द्र बनाओल गेल रहैक। ओहि केन्द्रमे शिक्षकक हेतु ओकर चयन भए गेलैक। चारि सए टका मासिक ओ रहबाक नि:शुल्क व्यवस्था। घरमे टाकाक अभाव रहिते छलैक संगहि ओतुका वातावरण सेहो नीक नहि रहि गेल छलैक। शीला ओहि काजकेँ पकड़ि लेबाक निर्णय केलनि। घरोक लोक कोनो आपत्ति नहि केलखिन। अगल-बगल गामक कैकटा स्त्रीगणसभ ओहिमे प्रशिक्षण लैत छलैक।■

16

क्रियाक प्रतिक्रिया स्वभाविक छैक। मोहनजीक तिरस्कारसँ ओकर हृदयमे तीव्र आघात भेलैक। बहुतरास भावना मोनेमे अटकि गेल छलैक।

"तहन की करी?"

"स्त्री छी अहाँ शीला।"

"से तँ सत्ते। मुदा तेँ की डरि गेलहुँ?"

"अन्याय सहबो तँ पापे छी।"

"मुदा तकर निराकरण की? सौंसे समाज स्त्रीक दुश्मन भए कए जे ठाढ़ अछि?"

"कोनो जरूरी छैक जे जेमहर बेसी गोटे जाइत हो से रस्ता नीके होइक?"

"से तँ जरूरी नहि छैक मुदा जतए सभ रस्ता बन्द होइक ततए एकपेरिओ छोड़ि देलासँ लोक कतए जेतैक?"

"मुदा किछु तँ करक चाही। ई समय दोबारा नहि भेटत।"

"की ठेकाना जे दोसरो आदमी ओहिना धोखा नहि देतैक?"

"की हेतैक? ठोकर खेनाइओ तँ करबनोक नीक होइत छैक। आँखि खुजतै कोना?"

"तँ की करतैक? नेताजी तँ बड्ड मानै छै। चलतै ओकरा संगे।"

"आ जँ ओहो धोखा दए दैक।"

"तँ की हेतैक?"

"आ जँ मोहनजीकेँ पता लागि जाइक।"

"तँ की हेतैक?"

"आ जँ ई गप्प ओकर नैहर धरि पसरि जाइक?"

"तँ की हेतैक?"

“अखनो असगर छी तखनो असगरे रहब।”

“मुदा मोहनजी ओकर पति छैक।”

“अंगोर छैक।”

“राम, राम एना किएक सोचैत छैक। पति परमेश्वर होइत छैक।”

“एक हाथे थपड़ी नहि बजैत छैक। मोहनजी ओकरा पत्नीक बुझैत छैक? नहि।”

“तहन कथीक ममता।”

“तँ मानि लौक नेताजीक गप्प?”

नेताजी गाहे-बगाहे हस्तकला प्रशिक्षण केन्द्र अबैत रहैत छलाह। ओ राज्य हस्तकला वोर्डक अध्यक्ष सेहो भए गेल छलाह। अएबाक मूल उद्देश्य शीलासँ भेँट करब रहैत छलनि मुदा बहाना आओर-आओर। कहिओ नवीन शाखाक उद्घाटन करब, कहिओ किछु, कहिओ किछु। नेताजी माने देबू देखैत, सुनैत सुन्नर, पोरगर छलाह। मुदा ओहि दिन शीला सोचि लेने छलि- “आइ ओकर मोन नहि तोड़बैक।”

नेताजी अबिते शीलाकेँ देखि मुस्का देलखिन।

“की हाल?”

“नीके कहक चाही?”

“की सोचलिएक? पटना चलबैक? ओहिठामक प्रशिक्षण केन्द्रमे प्रधानाचार्यक पद रिक्त छैक जे शीघ्र भरबाक छैक। एक हजार रूपया मासिक दरमाहा छैक संग रहबाक नि:शुल्क आवास।”

“किएक ने? रहबैक। जखन कही चली। जहन अहाँ सन-सन नीक लोक हमर शुभचिन्तक छथि तखन सोच कथीक?”

“तखन शुभस्य शीघ्रम् । आइ साँझमे हमरा जेबेक अछि। अहूँ चलू।”

“बेस चलब।”

नेताजी किछु काल एमहर ओमहर घुमलाह आ तकर बाद रिक्सा पकड़ि डेरा पहुँचि गेलाह।

ओमहर शीला पटना जएबाक तैयारी करए लगलीह। एकमोन होनि जे गाम जा कए मोहनजीसँ पुछि लिअनि, दोसर मोन होनि जे हुनकासँ पुछि कए की लाभ? मोहन कोन हमरासँ पुछि-पुछि कए काज करैत छथि जे ओ पुछि कए पटना जाएत।

“तँ की ओकरा नेताजीपर एतेक विश्वास भए गेलैक।”

“आ जँ ओ पटनामे दगाबाजी करैक।”

“स्त्रीगण जाति, असगरि पटनामे कोना रहतैक?”

“आ जँ नेताजी ओकरा संगे किछु गलत तरहेँ व्यवहार करैक?”

“तँ की हेतैक? स्त्रीक जन्मे से सभ बरदास करक हेतु होइत छैक। चाहे पति, चाहे प्रेमी, चाहे केओ कामी पुरुष- केओ-ने-केओ ओकर स्वतंत्र आस्तित्वकेँ नष्ट करिते अछि।”

“जहरमे दूध चाहे दूधमे जहर, बात तँ एक्के होइत छै।”

आओर शीला हँसि देलकैक अपने ऊपर। “बड्ड तर्क कए लैत अछि हमरो मोन।”- शीला सोचलकैक।

पटनामे किछु दिन ओकर समय पानि जकाँ कटैत रहलैक।

नेताजीक प्रति शीलाक मोनमे आकर्षण क्रमश: बढ़िते जा रहल छलैक। मासिक आमदनीमे वृद्धि भए गेल छलैक। मोहनजी सेहो प्रसन्न छलाह, कारण मासे-मासे पर्याप्त आमदनी भए रहल छलनि संगे जे मोन होइत छलनि से करैत छलाह। कोनो रोक-टोक नहि रहि गेल छलनि। ओहि दिन साँझमे महिला मनोरंजन क्लवक वार्षिकोत्सव छलैक आ ओहिमे नेताजी सेहो जाइत छलाह। संगे बहुत रास आन-आन नेता सभ सेहो ओहि कार्यक्रममे भाग लितथि। शीलाकेँ सेहो जेबाक इच्छा छलैक मुदा गुनधुनमे छलि कारण एहन कार्यक्रममे ओ कहिओ भाग लेने नहि छलि। मुदा नेताजी स्वयं कार लए कए आबि गेलखिन तँ ओ विदा भए गेल। ओहि कार्यक्रममे बहुत रास महिला सभ उपस्थित छलीह संगे सहरक तमाम गणमान्य लोकसभ सेहो छलाह।

दोसर दिन भोर भेने जहन ओकर नीन्न टुटलैक तँ ओ एकटा बहुत नीक होटलमे अस्तव्यस्त असगरि पड़ल छलि । स्मृतिपर जोर देलाक बादो बहुत रास गप्प मोन नहि पड़लैक- मोन रहैक तँ एतबे जे ओहि क्लबमे एकाएक बिजली कटल रहैक- चारू कात अन्हार गुज्ज लगैत छलैक। ओहि समय वातावरणमे एकटा अपूर्व गमक आएल रहैक। तकर बादक किछु घटनाक्रम ओकरा मोन नहि पड़लैक। कनिकालमे उठबाक चेष्टा कैए रहल छलि कि केओ अबैत बुझेलैक। खादी वस्त्र पहिरने आकर्षक व्यक्तित्वक केओ व्यक्ति अएलाह। एकटा डिब्बामे किछु सामाना ओहि ठाम राखि कनिक मुस्काइत वापस भए गेलाह। शीलाकेँ किछु बुझा नहि रहल छलैक जे की करी? ई के छलाह? ओ कतए अछि आ किएक अछि? एही असमंजसमे ओ ओहि आदमी द्वारा आनल बाकस खोललक।

"ऐं! ई सारी तँ हम रातिमे पहिरने रही।"

ओकर ध्यान चट दए अपनापर गेलैक। जेना ओकर काया - कल्प भए गेल होइक।

"एहन वस्त्र ओ करवन पहिरि लेलक?"

ओकर माथ घुमए लगलैक । ओ ओहीठाम बैसि रहलि। क्रमश: ओकरा अपन स्थितिक अनुमान होमय लगलैक। ओ चोट्टे उठलि आ डेरा दिस विदा भए गेलि। सीढ़ीसँ नीचा उतरिए रहल छलि कि नेताजी हँसैत आगा अएलखिन-

"कतए जाइत छी?"

आब शीलाकेँ बहुत बात बुझा रहल छलैक।

ओ आगा बढ़िते गेलि। जेना कि नेताजीक गप्प सुनने नहि हो । नेताजी अन्यमनस्क भावें अपन कोठरीमे वापस आबि गेलाह। रिक्सा तेजीसँ ओकर डेरा दिस बढ़ल जा रहल छलैक आ शीलाक मोन ओतबे तेजीसँ रिक्साक पहिआ जकाँ घुमि रहल छलैक।

"तँ की रातिमे मोहनजी आएल छलाह?"

"नहि, तँ नहि। से कोना संभव भए सकैत अछि?"

"आ जँ ओ आएल रहितथि तँ नुकाएल किएक रहितथि?"

"तँ ओ के छल? के छल?"

"नहि, नहि भ्रम भए रहल अछि।"

"भ्रम आ कि यथार्थ। मोहनजी की केओ आओर?"

"ने ई नेताजी धोखेवाज अछि। लुच्चा अछि।"

“मुदा, तकर प्रमाण की?”

“आखिर हमरा अनलक के? हम अनजान स्थान कोना गेलहुँ।”

“काज तँ ई नेताजीक थिक।”

“ठीके। ओहो तँ ओहिठाम छलहे।”

इएह सभ सोच-विचार करैत-करैत ओ पहुँच गेल अपन डेरा। ताला खोललक ओ चौकीपर धराम दए खसि पड़लि। ■

17

दू-तीन दिनक बाद फेर ओ अपन काजमे लागि गेलि। ओहि दिन इसकूलसँ तुरंते लौटले छलि कि नेताजी डेरापर आबि गेलखिन। शीला किछु नहि कहलकनि, नहि टोकलकनि। उपकरि कए नेताजी बाजि उठलाह- “की बात छै? बड़ गुम्म छी?”

एतबा गप्प सुनिते देरी ओकर देहमे आगि लागि गेलैक।

"चुप रहू। पतित, नीच.... ।” कहिने की की कहि गेलैक।

मुदा नेताजी हँसैत रहि गेलाह।

“की भेलैक? किएक एतेक तमसाएल छी?” –नेताजी पुछलखिन।

“तमसाएल नहि छी? हम अहाँक नीचतापर क्षुब्ध छी। ”

“सहरमे ओ सभ होइते रहैत छैक।”

“कोना नहि हेतैक। जाहिठाम अहाँ सन-सन लोकसेवक

छथि ताहिठाम आओर भइए की सकैत छैक? ”

“अहाँ नहि बुझैत छिऐक... ।” एतबेमे ओ अपन हाथ जेबीमे देलनि आ एकटा लिफाफा चौकीपर रखैत कहलखिन-

“देखू! एहिमे केहन नीक-नीक फोटो छैक ।”

शीला ओहि फोटो सभकेँ देखि अकबकायल रहि गेलीह ।

“की ई हमरे फोटो अछि?”

“हँ, अवश्य हमरे फोटो अछि ।”

“नहि, नहि, ई झूठ थिक, छल थिक, प्रपंच थिक। ई हमर फोटो कदापि नहि भए सकैत अछि ।”

“फोटो तँ हमरे अछि। आ ई दोसर के सभ अछि? नेताजी आ तेसर, चारिम... कहि ने के के अछि?”

“मुदा ई फोटो कोना खिचाएल? के खिंचलक। हम ओतए कोना पहुँचलहुँ?”

“एतेक रास फोटो। आब की होएत? कहीं केओ देखि लेलक तँ ?कहीं मोहनजी बुझि गेलाह तँ?”

शीला गुनधुन कइए रहल छलि की नेताजी बहुतरास फोटो ओहिठाम राखि देलखिन। शीलाकेँ किछु नहि फुरा रहल छलैक। “ओ की करए?केमहर जाए?”

तकरबाद कतेक प्रयास ओ केलक जे ओहि चक्रव्यूहसँ कहुना मुक्ति होइक मुदा सएह असंभव बुझाइत छलैक। नेताजी ओकरा प्रचूर भयादोहन कए रहल छलखिन। होटलक जाहि कोठरीमे ओ राति भरि निसाँमे मातल पड़ल छलीह ताहिमे स्वचालित कैमरा लागल छलैक जे शीलाक अत्यन्त विकट चित्र

सभ खीचि लेने छल। ओहि फोटोकेँ बाहर छपि जएबाक डरे ओ नेताजीक विरोध नहि कए पबैत छलि । किछु दिन धरि तँ ओ नेताजीक अनुनय-विनय करैत रहलीह मुदा जखन ओ किछु सुनबा लेल तैयार नहि रहथिन तँ ओ निश्चय केलक जे अहि समस्याक शीघ्रे नओ छओ कइए कए रहब।

नेताजीकेँ ओ अपन डेरापर चारि बजे बजओलकनि आ स्वयं ओहिसँ पहिने थाना जा कए एकटा रपट लिखा आएलि जाहिमे सभटा वृतान्तक स्पष्ट वर्णन छल। चारि बजे नेताजी अएलाह आ संगे एस.पी.साहेब सेहो छलाह। पुलिस इन्सपेक्टर दुनू महाशयकेँ संगे देखि फटकिएसँ चंपत भए गेल। ओकर ई हालत देखि शीलाकेँ बड़ आक्रोश भेलैक। ओ एस.पी. आ नेताजीकेँ एक-एक चमेटा लगओलक आ अड़बड़ बजैत बाहर भए गेलि । शीला जोर-जोरसँ चिकरैत रहलि । तकरबाद तँ जबरदस्त हंगामा भेल । मुहल्लाक लोकसभ सेहो जमा भए गेलैक आ शीला अपन मोनक एक एकटा गप्प चिकरि- चिकरि कए कहि देलकैक। सभ केओ नेताजी ओ एस.पी. साहैबकेँ गरदनिया दैत फज्जति करए लागल।

तकर बादसँ बहुत दिन धरि नेताजी फेर ओहिठाम नहि अएलाह मुदा शीलाकेँ ओहि मोहल्लामे रहब पराभव भए रहल छलैक। जएह देखैक से आंगुर उठबए लगैक। चारूकात नाना प्रकारक अफवाह। जकरा जएह मोन होइक सएह कहैक। तेँ ओ एक राति चुपचाप ओहि स्थानक परित्याग कए अज्ञातवासक हेतु विदा भए गेलि ।■

18

मोहनजी शीलाकेँ क्रमश: बिसरले जा रहल छलाह। ओहि दिन डाकिया एकटा रजिस्ट्री चिठ्ठी दए गेलनि। ओहि पत्रमे शीलाक बहुत अश्लील फोटो सभ छलैक। से देखि मोहनजी अत्यन्त खिन्न भए गेलाह। एहि तरहें शीलाक हेतु सासुर रहबाक आधार सभ दिनक हेतु समाप्त भए गेल। मोहनजीक धैर्य जवाब दए रहल छलनि। ओ कोनो हालतमे शीलाक संग रहबाक हेतु तैयार नहि छलाह। संगे हुनक आर्थिक स्थिति क्रमश: सुधरि रहल छलनि। ओ दोसर बिआह शीघ्र कए लेबाक निर्णय केलनि, संगे शीलाकेँ सेहो अपन मंतव्यसँ अवगत करा देबाक हेतु पत्र लिखि देलखिन।

शीला भागल-भागल पटना पहुँचलि । ओहीठाम आगूक पढ़ाइ करए लागलि संगे किछु किछु काजो करए। एकयुगक बाद जखन ओ सासुर वापस आएलि तँ ओहिठामक नक्सा तँ बदलिए गेल छलैक संगे सभ आदमी सेहो बदलि गेल छलैक। भोर भेने मोहनजी ओहि फोटोक पोथा ओकर हाथमे धरबैत अंट-संट कहए लगलखिन । फोटो देखि शीला अबाक रहि गेलि आ चोट्टे ओहिठामसँ घूमि गेलि । घुमैत काल किछु नहि फुराइक जे की करी। अंततोगत्वा, सोचलक जे गामे वापस चली। “मुदा गामपर जाइ तँ ककरा लग जाइ। ओहिठाम अपन अछि के?”

“गाममे केओ हमरा चिन्हत?”

“आ जँ नहि चिन्हए।”

“तँ देखल जेतैक।”

आओर ओ रिक्सापर गाम दिस विदा भए गेल।

गाम पहुँचिते देरी ओकर भेँट नीरजसँ भेलैक। नीरजक आश्चर्यक ठेकान नहि रहलैक। मोन होइत छलैक जे शीलासँ बहुत रास गप्प करी मुदा चौकपर बहुत रास लोक छलैक तेँ किछु नहि बाजि सकल। रिक्सा बलाकेँ टाका दए ओ गाम दिस विदा भेल। चारिए डेग आगा बढ़ल होएत कि बूधन भाइ नजरि पड़लखिन। वयोवृद्ध, टुटलाही चश्मा तरसँ तकैत एकटा व्यथापूर्ण नेत्र। एकटा मर्मान्तक कथाक मुख्य नायक, शेषित समाजक आदर्श प्रतिनिधि छलाह। शीलाकेँ देखिते ओ कानए लगलाह। बूधन भाइक वृतान्त शीलाकेँ नीक जकाँ बूझल छलैक आ एतेक दिनक बाद हुनका देखि ओ सभ घटना नवीन भए गेल छलैक। ओ बूधन भाइक संग धए लेलक। अपन आओर छलैहे के जतए जाइत।

बूधन भाइ आगा-आगा आ शीला पाछा-पाछा। बूधन भाइक धिआ-पुता सभ समर्थ भए गेल छलैक । सभ अपन-अपन घरनी लए कए कात भए गेल छलैक। बूधन भाइ फराके दलानपर रहैत छलाह। अपनेसँ भोजन बरकबै छलाह। बड़काटा दरबाजामे राखल एकटा चौकी, एकटा खाट आ दू-तीनटा टुटलाही कुर्सी।

दरबाजापर पहुँचि चट-पट ओछाओन ओछा कए खाटपर शीलाकेँ बैसए कहलखिन आ अपने आंगन दिस गेलाह। तीनटा पुतहुँ छलनि। तीनू अखन सासुरेमे छलखिन। शीलाक अएबाक समाचार ओ ओकरा सभकेँ देलखिन मुदा केओ कनेको रूचि नहि देखौलक।

“गे दाई। के छै ई शीला?” –एकटा कहलकैक।

“केओ रहौक, हमरा कोन मतलव?” –दोसर कहलकैक।

"ई बूढ़वा तँ नित्य एकटा ने एकटा समस्या लए अबैत अछि। कहि ने आइ ककरो पकड़ने चल अबैत रहल?" –तेसर कहलकैक।

बूढ़ा टकर-टकर तकैत रहलाह। सुनैत रहलाह। कइए की सकैत छलाह? बेटा सभ बेकहल भए गेल छलनि। वापस दरबाजापर अएलाह तँ देखलनि जे लग-पासक कैकटा दाइ-माइ सभ आबि गेल छलीह आ शीला हुनकासभसँ गप्प कए रहल छलीह ।

"के छै ओ स्त्रीगण?"

"हेतैक केओ?"

"केओ चीन्हल देखल लगैत छै?"

"तोरा तँ अहिना बुढ़िआ दादी सभ चिन्हले लगैत हौ।"

"हमरा आगूमे एकर जनम भेलैह आ हम कोना नै चिन्हबै?"

"के है दादी.!"

"हीरा बाबू छलै बड़का जमींदार। ओकर बेटी हइ। मास्टरी करै छै पटना सहरमे।"

"चल, देखिऐ केहन होइत छैक सहरक लड़की।"

आ दुनू गोटे ओकरा लग पहुँच गेलि। शीला बुढ़िआकेँ चट दए चिन्हि गेलैक। कहि ने बच्चामे कतेक दिन ओकरा कोरा खेलौने हेतैक । खबासक मरलाक बाद वा हीरे गिरहथक ओहिठाम काज कए जीबैत छल। जहिआसँ हीरा बाबू बिलटलाह तहिएसँ खवासिनी सेहो बिलटि गेलि। शीलाकेँ देखैत देरी ओकरा पुरनका गप्प सभ मोन पड़ि गेलैक।

बुढ़िआ शीलाक गर्दनि धए कए कानए लागलि। बेस

मुश्किलसँ ओ चुप भेलि। शीलाकेँ एतबा स्नेह आओर ककरोसँ नहि भेटलैक। दौरल-दौरल खवासिनी अपना खोपरीसँ मरूआक टटका रोटी नेने अएलैक आ बड़ संकाँचसँ शीलाक आगूमे राखि देलकैक।

गाम-घरक सभटा हाल ओकरा खवासिनीसँ पता लागि गेलैक। ओकरा इहो बूझएमे आबि गेलैक जे नीरज गामकेँ सुधारबाक प्रयासमे तत्परतासँ लागल अछि। साँझमे बूधन भाइ भोजन बनएबाक हेतु सभ चीज आबि कए रखने छलाह कि शीला आश्चर्यसँ पुछलकनि- "एना किएक काका? अहाँ फराक भोजन किएक बनवै छी.!"

बूधन भाइ बकर-बकर तकैत रहलाह आ शीला भोजन बनबए लगलीह। ■

19

नीरज हरखूक व्यवहारसँ बड़ दुखी भए गेल छलाह। पासमे जतेक टाका छलनि से इसकूलमे दए देने छलखिन। कैकमाससँ कोनो कमाइ नहि भए रहल छलनि। संगे गामक वातावरणमे कोनो सुधार नहि भए रहल छलैक। सभ अपना-अपनामे लागल छल। इसकूलमे सेहो जबरदस्त राजनीति पैसि गेल छलै। जातिवाद ओ गुटबंदी जोर पकड़ने जा रहल छल। स्थितिपर काबू करबाक उद्देश्यसँ ओहि दिन साँझमे फेर बैसार भेल। चौगामाक लोक जमा छल ओहिमे। माइकपर चिकरैत नेताजी घोषणा कएलनि-

"भाइ लोकनि.!

कोनो नीक काज करबामे बाधा होइते छैक। अहाँ लोकनिक जे मौलिक समस्या अछि ताहिसँ हम सभ गोटे अवगत छी। मुदा एतेक दिनक जे जाम पड़ल अछि तकरा एक्के दिनमे केओ छोड़ा नहि सकैत अछि। तेँ हमरा लोकनिकेँ धैर्य पूर्वक प्रयास जारी राखवाक चाही। आजुक युग वैज्ञानिक युग छैक। दिल्लीमे बैसल लोककेँ गाममे देखल जा सकैत अछि। गाममे बैसल लंदनक लोकसँ गप्प कएल जा सकैत अछि। अहाँ लोकनि हजार वर्ष पाछाक युगमे जीबि रहल छी। सभसँ पहिने हमरा सभकेँ अशिक्षा हटएबाक अछि। गरीबी हटएबाक एकमात्र रस्ता ओएह थिक। संगे-संग अन्यान्य सामाजिक कुरिति जेना दहेजप्रथा, विधवा बिआह नहि हेबाक प्रथा आदि आदिक विरोध करक अछि। मुदा से एकरा हम असगरे नहि कए सकैत छी। ओहि हेतु सभक सहयोगक प्रयोजन छैक। पुरुष, स्त्री, बच्चमे जागरण अनबाक छैक। तेँ हमरा सभकेँ संकल्प लेबए पड़त।”

एतबा बात ओ बाजिए रहल छलाह कि भीरमे सँ एकटा महिला हनहनाइत बाहर आबि, मंचपर चढ़ैत चल गेलि आ दिस हाथ बढ़ओलक । ताबतेमे सुरक्षा प्रहरी दौड़ल आ ओकर हाथ पकड़ि लेलक । चारू दिस जबरदस्त हल्ला भेल।” ई के? ई की?”

मंचपर शीलाकेँ चढ़ैत नीरज देखलक मुदा ओ किछु सोचि सकए ओहिसँ पहिने ओ अपन चमत्कार कए चुकल छलीह। नेताजी तुरंत पाछा भए गेलाह। शीला माइक पकड़लक आ बाजब शुरु केलक। जनतामे उत्सुकता बढ़ैत गेल । सभ ओकरा बारेमे जिज्ञासा करए लागल ।

“के अछि ई महिला?”- केओ कहैक किछु, केओ किछु।

एतबेमे तीन-चारिटा लठैत लाठी भजैत मंचपर अएलाह आ माइककेँ फेकि शीलाकेँ हाथ पकड़ि पाछा धकलि देलखिन। मंचपर बैसल महानुभाव लोकनि कहुना कए शीलाकेँ बचबैत पाछा केलनि। नेताजी उत्तेजित, ग्लानिसँ भरल मुँह लेने मंचसँ उतरलाह आ अपन जीपपर चढ़ि गाम दिस बिदा भए गेलाह।

शीलाक गाम वापस अएनाइ सार्थक भए रहल छलनि। साँझमे नीरज हुनकासँ भेँट केलखिन। शीला एकएकटा गप्प नीरजकेँ कहलकैक। नेताजीक पोल खुजि गेल छलनि। नीरज शीलाक हेतु सभ व्यवस्था गाममे करबा देलखिन आ स्वयं एक दिन गाम छोड़ि सहर बिदा भए गेलाह। हुनक एहि कार्यसँ गामक लोक दुखी भए गेलथि। इसकूल क्रमश: फेर ठनमना गेल आ गामक लोक फेर पुरनका लीकपर चलए लागल।

जाहि समाजक समस्त चेतना स्वार्थक समुद्रमे नून बनि बिलाएल रहैत अछि ततए सामाजिक परिवर्तन आसान नहि होइत छैक। रूढ़ि, धर्मान्धि ओ अंधविश्वाससँ ग्रस्त समाजक कायाकल्प करब कोनो नेना भुटकाक खेल नहि भए सकैत अछि। एहि लेल जन्म-जन्मान्तर संघर्ष करब आवश्यक छैक। कतेक दधीचिकेँ अपन हड्डी दान करए पड़ि सकैत छैक। कतेक हरिचन्द्रकेँ अपन पुत्रक दाह संस्कारक हेतु श्मसान घाटक शुल्कक हेतु, सत्यक प्रति अनन्य निष्ठाक हेतु हृदय वज्र करए पड़ि सकैत छैक।

“आ जँ तइओ ई समाज नहि बदलै?”

“हरिश्चन्द्र, दधीचि, राम ओ कृष्ण कहाँ बदलि सकलाह। एहि समाजकेँ।”

“गाँधी, सन-सन समाज सेवक कहाँ बदलि सकल एहि

रूढ़िबादी समाजकेँ?”

“तकर माने ई तँ नहि जे हाथ-पर-हाथ धऽ कए बैसल रही।”

“तँ की करी?”

“जकरा लेल कानी तकरे आँखिमे नोर नहि होइक तखन की करी?”

“किछु होइक मुदा ई समाज अछि एकदम जड़। एकर इलाजक हेतु जबरदस्त शल्य चिकित्साक प्रयोजन अछि।”

“मुदा ई शीला कहाँसँ प्रकट भए गेलि?”

“साक्षात चण्डी लगैत अछि।”

“मुदा ई नेताजी एहन ढोंगी अछि तकर कल्पनो नहि छल?”

“तोरा दुनियाँ दारीसँ कतेक मतलब छह नीरज। नेता ओहिना नहि होइत अछि लोक? नेता बनक हेतु बारह घाटक पानि पीबए पड़ैत छैक।”

इएह सभ सोचैत-सोचैत ओ पटना पहुँचि गेल छल। गाड़ी पटना टीसनपर ठहरल। ट्रेनसँ उतरि यात्री सभक भीड़मे नीरज सेहो अन्यमनस्क भावेँ आगा बढ़ल जा रहल छल। ■

20

नीरजकेँ गामसँ गेला मास दू मास भेल हेतैक। गाममे नेताजीक पोल खुजि गेल छल आओर ओहो गाम गेनाइ कम कए देने छलाह। इसकूलक स्थिति दिन-प्रतिदिन खराबे भेल जा रहल छलैक। धीरे-धीरे नेताजी अपन समर्थन वापस कए लेलखिन ।

संगे इसकूलकेँ हेतु देल गेल अपन भवन सेहो वापस करा लेलखिन।

सौंसे गाम फेरसँ पुरनका रस्तापर चलए लागल। तिरपित काकाक ओहिठाम नित्य भांगक जलसा होइते रहल। नंगरू मोची फेर भगतै खेलाए लगलाह। रौदी भेलापर लाखक-लाख महादेवक आराधना होमय लागल। नान्हिटा छौंड़ासभ पेट पोसबाक हेतु चरबाही धए लेलक। सौंसे गाम जेना अफीमक नशामे बुत्त अन्यमनस्क भावें बिना कोनो गंतव्यकेँ आगा बढ़ल जा रहल हो।

महींषक पीठपर चढ़ल गोपला आ रमुआ गप्प करैत-करैत साँझ कए दैत छल। गाम जा कए आरामसँ मालिक ओहिठाम घूर तपै छल आ कहिओ भूखले पेट, कहिओ आधापेट खा कए सुति जाइत छल। ओहि दिन इसकूलक मैदानमे महींष चरबैत-चरबैत दुनू छौंड़ा बड़ खुस भेल रहए। "भने ई इसकूल टुटि गेल नै रे भाइ। केहन हरिअर घास छैक। महिंष खा कए अघा गेल अछि।"

"ठीके ई मस्टरबा जहर रहै । इह! मारै की कसि कए।"

"हम तँ एक्के दिन गेलियौ भाइ! तेहन छड़ी मारलक जे की कहिऔक। तहिआसँ इसकूल गेनाई साफे बन्द।"

"नीक केलें दोस्त। कतेक नीक लगैत छै महींषक पोनपर।"

"आ दुनू छौड़ा गीत गाबए लागल- "सुन सुन पनिभरिनी गे...।"

कोरिआनीक रघुआ अमात जगजिआर भगत छल। एक-सँ-एक रोगीकेँ ओ क्षणमे ठीक कए दैत छल। क्षणमे छनाक। गाम-गामसँ लोकसभ ओकरा ओहिठाम करमान लागल रहए। दरबाजापर नाना प्रकारक देवी देवताक आवाहन होइत रहैत छल।

पूर्णिमा दिनक रघु भगत नव-नव चेला सभकेँ दीक्षा दैत छल। राति भरि घर बन्द रहैक। कहि नहि कोन-कोन मंतर पढ़ैक। बभनटोलीक लोकसभ सेहो ओकरा ओतए करमान लागल रहैत छल। मधुरी झाक घरवाली सेहो भगतै सिखबामे लागल छलीह। राति-बिराति लगन लागल रहैक- भगतै सीखबाक। दुपहर रातिक भगतक ओहिठाम जाइत आ भरि राति भगतै होइतैक। होइत-होइत जहन देबी सिद्ध होमय लगलैक तँ आओर कसि कए साधना करए लगलीह। कहिओ भगत आ कहिओ पण्डिताइन एक-दोसरक ओहिठाम चल जाइत छल। देबीक डरे गामक लोककेँ किछु बाजबामे असगुन बुझाइक। मधुरी झा घरबालीक क्रिया-कलापसँ बड़ खुस रहैत छलाह। रघु भगतक कमाइसँ इलाका परिचित छल। कैकटा कोठा बना लेने छलाह। जँ देबता सिद्ध भए गेलाह तँ कमी कोन बातक। गृहस्थीक भारसँ घिसरी कटैत-कटैत मोन उबि गेल छलनि। ओ घरक लोकक हेतु भनसिआटा छलीह। जीवनक समस्त सुख ओ आकांक्षाक तिलांजलिक, नाम छलैक ओकर गृहस्थी। ताहिमे जेना भगत जेठक रौदीक बीचमे बर्षाक बुन्नी भए प्रकट भेलैक । रातिभरि भगत ओकरासँ केहन मीठ-मीठ गप्प करैक। ओकरा तँ जेना नव जीवन भेटि गेल रहैक। कखनो काल मधुरीझा केबाड़ लग अबैत छलाह-फुसुर-फुसुर सुनबो करैत छलाह- आ ई सोचि जे देबी जागि रहल छै दबले पैर घुरि जाइत छलाह। आ एक दिन पण्डिताइन भगतक संगे निपत्ता भए गेलीह तँ मधुरी झा सभक मुँह तकैत रहि गेलाह आ जकरा जे फुराइक से कहैत रहि गेल।

पण्डिताइन भगल-भागल पटना अएलीह आ संगे रहैक रघुआ भगत। कैकदिन धरि अनवरत भगतै होइत रहल। बिना

कोनो व्यवधानके, बिना कोनो भए ओ संकोच केँ देवीक आवाहन करैत रहलाह भगत। आ जहन पण्डिताइनकेँ सिद्ध होमय लगलनि तँ भगत एक दिन रातिमे निपत्ता भए गेलाह। भोरमे पण्डिताइनक निन्न टुटलनि तँ ओ एसगरे छलीह पटना जंकसनक प्लेटफार्मपर। संयोगसँ नीरज अपन एकटा मित्रकेँ संगे ओतए आएल छलाह। पण्डिताइनकेँ असगरे ओतए देखि बड़ छगुन्ता लागि गेलनि। पण्डिताइन सेहो नीरजकेँ देखलकिन मुदा चिन्हि नहि सकलीह। नीरज आगा बढ़ि हुनका गोर लगैत असगरि पटना अएबाक कारण पूछय लगलखिन। पण्डिताइन घोघ तानि लेलखिन।

मौन वार्तालाप बड़ी काल धरि चलैत रहल। नीरज परिस्थितिक आकलन करैत रहलाह आ पण्डिताइन किछु नहि बजबाक निर्णयपर अडिग रहलीह। एही बीचमे रेलगाड़ी आबि गेलैक आ नीरज अपन मित्रकेँ चढ़एबाक हेतु आगा बढ़ि गेलाह।

दानापुर फास्ट पैसेंसर सीटी दए रहल छल। यात्रीसभक आवागमन तेज भए गेल छल। ओही भीड़मे पण्डिताइन आगा बढ़लीह आ गाड़ीक एक डिब्बामे घुरिआ गेलीह। गर्मीक मास। लोकक भीड़सँ डिब्बामे घुसकबाक मौका नहि छलैक। दम फुलि रहल छलैक। ओही डिब्बाक एक कोनामे भगत सेहो दुबकल छलाह। गाड़ी धीरे-धीरे प्लेटफार्म छोड़ए लगलैक। जँ जँ तेज चालि गाड़ी पकड़ैत गेल तौं तौं लोककेँ उसास होइत गेलैक। मोकामा अबैत-अबैत डिब्बामे लोकक भीड़ कम भेलैक। एतबेमे पण्डिताइनक नजरि भगतपर पड़लनि। लोकक भीड़केँ कटैत सोझे भगतक देहपर कुदि गेलीह आ सभक समक्ष ओकर नरेठी दाबए लगलीह। सही मानेमे हुनका देवी आबि गेल छलनि। गाड़ी बरौनी

जंक्सनपर पहुँचि रहल छलैक आ सौंसे डिब्बामे हल्ला सुनि लग-पासकेँ पर्याप्त लोक ओहि डिब्वाक सामने जुटि गेल छल। भगत गरदनि पण्डिताइन पकड़ने आ पण्डिताइनक झोंटा भगत पकड़ने डिब्वासँ उतरलाह। एतबामे पुलिस पहुँचि गेल आ दुनू गोटेकेँ गरदनिआ दैत टीसनसँ बाहर कए देलक।

भगत पण्डिताइन दिस आ पण्डिताइन भगत दिस तकैत रहलाह। फेर अपने दुनू गोटे किछु फुसफुसा कए गप्प-सप्प केलाह आ पण्डिताइन ओ भगत पाकड़ीक गाछक छाहरिमे बैसि रहलाह।

भगत कहलकैक- “देखलह पण्डिताइन। आबि गेलह ने । रोकि सकलह अपनाकेँ?”

“बढ़िआँ जादू जनैत छह भगत। तों बड़ स्वार्थी लोक छह। सभटा मंत्र पढ़ि अपने निपत्ता भए गेलह । ई तँ संयोगसँ हम गाड़ीपर चढ़ि गेलहुँ।”

“नै पण्डिताइन। तों नै बुझैत छहक। हम तँ जादोसँ सभ बुझै छलिये जे की होतै। बस तोहर जाँच करै छलिअह। आब तोरा देवी सिद्ध भए गेलह। एकटा पुड़िया बढ़बैत कहलकैक-

“लए खा लए। भगवतीक प्रसादी है।”

पण्डिताइन पुड़िया खोललीह आ प्रसादी फाँकि गेलीह। प्रसाद खाइते देरी ओ ठामहि बेहोस भए गेलीह। भगत एकटा उपहासपूर्ण दृष्टिसँ ओकरा दिस तकलकैक, झोंट बन्हलक आ डेगार दैत आगा बढ़ि गेल। मोने-मोने पण्डिताइनकेँ गरियबैत, ओकर मूर्खतापर हँसैत भगत आगा बढ़ि रहल छलाह।

पण्डिताइन तिन-चारि घण्टा ओतहि पड़ल रहलीह। साँझक सूरसार भए रहल छलैक कि केओ महिंषवार हल्ला केलकै- “के

छियै? एना किएक पड़ल छैं?”

कैकबेर चिकरलकै। कहुना पण्डिताइन आँखि खोललीह। चारूकात अकचका कए तकलीह। केओ कतहु ने। ताबतेमे महींषवारपर नजरि पड़लनि।

घोघ तानि कए बैसि रहलीह। महींषवार आगा बढ़ि गेल। पण्डिताइन अकचकायल ओहीठाम बैसल रहलीह। अकाशक शून्यता जेना किछु पुछि रहल छलखिन।

एहि घटनाक बहुत दिन धरि लोकसभमे चर्च होइत रहल । केओ कहैक जे पण्डिताइन ओतए छथि तँ केओ किछु। मुदा किछु पक्का खवरि नहि लगलैक। हँ, नीरज गाममे सूचना अवश्य देलक जे ओ पण्डिताइनकेँ रेलवे टीसनपर देखने छलनि। मुदा गाममे केओ ओहि बातपर विश्वास नहि केलकैक। एहि प्रकारक घटना सभ होइते रहैत छलैक। ■

21

नीरजकेँ गामसँ चलि गेलाक बाद गामक रूखि फेर ओहिना भए गेलैक। शीला कैकदिन धरि सोचैत रहलि । अन्ततोगत्वा, किछु करबाक निश्चय केलक। बैसलासँ काज तँ हेतैक नहि। किछु-ने-किछु करए पड़तैक। गामक वातावरणकेँ सुधारबाक प्रवल संकल्प ओकर अन्तर्मनमे अहुँरिआ काटि रहल छलैक।

गामक पुबरिआ पोखरिपर इसकूल बनएबाक योजना ओकर मोनमे कतेक दिनसँ छलैक। घरे-घरे घुमि कए कहुना कए किछु

टका भेलैक आ ताहि टाकासँ इसकूलक स्थापना भेल- आदर्श विद्यालय। छोट-छोट बच्चासभकेँ बहुत सिनेहसँ ओ पढ़बैत छलीह। पाँच-सातटा छौड़ा-छौड़ी छलैक। साँझ-परात इसकूल चलैक। दिनमे आओर काज सभ करैत छलीह। एहि तरहें आशाक एकटा नवीन ज्योति पुन: ओहि गाममे जागि गेल छलैक।

सरकार दिससँ प्रौढ़शिक्षाक कार्यक्रम बहाल भेल छलैक। बहुत रास लोक बाहरसँ आबि आबि गाममे लोक सभकेँ साक्षरता अभियानमे भाग लेबाक हेतु प्रेरित कए रहल छलाह। सरकार एहि प्रयाससँ शीलाकेँ सेहो साहस बढ़लैक। क्रमश: ओकर इसकूलकेँ प्रोढ़ शिक्षा केन्द्रसँ सहायता भेटए लगलैक।

साँझ कए गाममे कैकठाम लालटेन जरए लागल आ लालटेनक झिलमिल प्रकाशमे गामक भविष्य सेहो जेना जगमगाए चाहैत छल। यद्यपि गाममे आपसी मतभेद चरम सीमापर रहैत छल सभ एक-दोसरक टांग पाछा खिचवाक उपक्रममे रहैत छल । फुसियाहीक झगड़ा । ओकर पिता ओकर पितामहकेँ मारलकैक, तकर बदला तकर संतति लेत आ ई क्रम अनवरत अहिना चलिते रहलैक। दरिद्रता, अशिक्षा ओ अंधविश्वास तखन हटत कोना? जरूरी की छैक? ओएह तँ थिक हमरा लोकनिक गामक आत्मा। कतेक परिवार अखनो दुनू संध्या भोजन नहि कए पबैत अछि। शिक्षा, बिमारी ओ अन्य वस्तुक तँ कथे कोन? उपनयन, बिआह ओ श्राद्धमे कएल जा रहल खर्चसँ गरीबी आओर बढ़ले जा रहल अछि। मुदा तइओ लोक पुरनके रस्तासँ चलि रहल अछि। इएह सभ सोचैत रहैत छलाह नीरज ।

नीरजकेँ पटना पहुँचि निश्चिन्त भावसँ सोचवाक पर्याप्त

अवसर भेटलनि। ओहिठाम किछु दिन एमहर-ओमहर केलाक बाद ओ भारतीय प्रशासकीय सेवाक हेतु परीक्षाक तैयारी करए लगलाह। अथक परिश्रम ओ दृढ़ इच्छा शक्तिक कारण परीक्षाक नीक तैयारी कए लेलाह आ पहिले प्रयासमे सफल सेहो भेलाह। परीक्षाफल घोषित होइतहि नीरजक चर्च यत्र-तत्र होमय लागल। बड़का-बड़का लोकक ओहिठामसँ बिआहक प्रस्ताव सेहो आबए लागल। नीरजक फोटो आर्यावर्त, इन्डियन नेशनक मुख्यपृष्ठपर छपल। ओ सफलेटा नहि भेल छलाह अपितु पूरा देशमे पाँचम स्थान प्राप्त केने छलाह। अस्तु, ओ एकटा गौरवक विषय भए गेलाह। एतेक भारी उपलब्धिक बादो नीरजक आत्मशांति नहि भए रहल छलनि, कारण गामक दुर्दशा सदिखन मोनमे अखरैत रहैत छलनि। जाहि अखवारमे हुनक फोटो छपल छलनि ताहीमे एकटा आओर फोटो छपल रहैक समाचारक संग- "महिलाक लवारिस लास पाओल गेल।"

"अरे! ई तँ पण्डिताइन थिकीह। से कोना भेल.! से कोना भेलऽऽ।" इएह सोचैत-सोचैत साँझ भए गेलैक।

आइ.ए.एसक नौकरी शुरु केलाक किछु सालक बाद नीरज कलक्टर भेलाह। ई समाचार ओहि इलाकामे बिजली जकाँ पसरि गेल। जएह लोकसभ हिनक निन्दक छलाह सएह सभ सभसँ पहिने आबि कए भेँट कए गेलखिन। मुदा नीरज कोनो बात बिसरल नहि। गामक पुर्निर्माण करबाक योजना ओकर माथमे रहि-रहि अबैत रहैत छलैक। मुदा गामक परिस्थिति सोचलासँ जोश ठंढा भए जाइत छलनि।

ओहि दिन जिला भरिक व्यस्क शिक्षामे लागल लोक सभक

बैसार टाउन हॉलमे छलैक। ओहि बैसारक अध्यक्षता जिलाधीश महोदय स्वयं कए रहल छलाह। अचानक हुनक ध्यान शीलापर पड़लनि। हुनक गामक- वरहमपुराक प्रतिनिधि शीला। नीरजक प्रसन्नताक ठेकान नहि छलनि।

"अहाँ कोनो अएलहुँ?" नीरज मौका पाबि शीलासँ पुछलखिन।

"अहींक नाम सुनि कए?"

"आओर गामक की हाल अछि?"

"गाम ओहिना-क-ओहिना अछि। गरीब सभ आओर गरीब भेल अछि। झगड़ाक संख्या बढ़ले अछि। मुदा नीक-मे-नीक बात ई भेल जे हमर इसकूल बेस जोर-सोरसँ चलि रहल अछि।"

नीरज कनीकाल चुप्पे रहि गेलाह। फेर कहलखिन- "हम की मदति कए सकैत छी? "

"बहुत रास कए सकैत छी।"

"कम-सँ-कम किछु आर्थिक सहायता तँ कइए सकैत छी।"

नीरज तुरंत अपन पी.ए.कैं बजओलाह आ अपन फण्डसँ पचास हजार रूपया सहायता एक मुस्त विद्यालयकैं देलखिन। संगे भविष्यमे आओर सहायता देबाक आश्वासन सेहो देलखिन।

नीरजक सक्षम सहयोगसँ गामक इसकूल चमकि गेल। सौंसे गामक भविष्य एकबेर फेर नव मोड़ लेबाक हेतु तत्पर भए गेल।■

22

गामक इसकूल बहुत नीकसँ चलि रहल छल। बहुत रास मास्टर सभ इसकूलमे आबि गेल। विद्यार्थियोक अभाव नहि रहलैक। गामक छौड़ा-छौड़ी सभ इसकूलमे पढ़ए लागल आ देखिते- देखितेमे इलाकामे पढ़लाहाक संख्या कैकगुणा बढ़ि गेल। कलक्टर साहेब समय-समयपर इसकूल अबैत रहैत छलाह। गामसँ मैट्रिक पास कए कए युवक सभ पढ़बाक हेतु मधुबनी, दरभंगा जाए लागल। सौंसे गामक लोककेँ भविष्यक प्रति आस्था होमय लगलैक। मुदा टुनटुनमाक घर ओहिना-क-ओहिना रहि गेलैक। कैकदिनपर घरमे साँझ पड़ैत छलैक। घराड़ीक जमीन इसकूलमे पड़ि गेल छलैक। मुदा गामक सरगना लोकसभ इसकूलसँ सटले खोपरी बन्हबा देने रहैक। बेटा रिक्सा चलबैत छलैक। अपने बोनि करैत छल। कहिओ काल जमाय आबि जाइत छलैक तँ ओकरो बोनिमे लगा दैत छल। कहुनाक गुजर भए जाइत छलैक। बोली बानी नीक छलैक तेँ बड़का-छोटका सभ आदर करैत छलैक। इएह छलैक ओकर परिवर्तनविहीन, यंत्रवत जीवन यात्रा।

कालेजसँ बी.ए., एम.ए. डाक्टरी इंजीनियरिंगक पढ़ाइ पढ़ि-पढ़ि नव-नव लोककेँ गाम नीक नहि लगैत छलैक। सहरक संस्कृति गामक निर्दोष हृदयकेँ दुषित कए रहल छल। नीरजकेँ ई समाचार भेटैत रहैत छलैक। ओहि दिन सरकारी काजसँ बेनीपट्टी जाइत काल ओ गाममे कनीकाल रूकल छल। ओकर ध्यान टुनटुनमापर पड़ि गेलैक। हाथमे लाठी, ठेहुन धरि फटलाहा, मैल धोती आ जट्टासन पाकल केस, सएह छल टुनटुनमाक परिचय। टुनटुनमोक

ध्यान नीरजपर गेलैक आ तर दए बाजि उठलैक-

"प्रणाम मालिक।"

आ नीरज अबाक रहि गेल। नीरज कलक्टरसँ कमिश्नर भए गेलाह। गामक कतेको छौड़ा डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर भए गेल। नवतुरिआकेँ गाम नीक नहि लागल लगलैक मुदा टुनटुनमा ओहिना-क-ओहिना छल। ने बगय बदललैक ने बानी। टुनटुनमाक पाँचो बेटा रिक्सा चलबैत छलैक किरायापर। साँझमे सभ तारी पीबि मस्त भए जाइत छलैक। भोरे फेर रिक्सापर। "आइए रहिका, मधुबनी, बेनीपट्टी... ।"

गत्र-गत्र रिक्सा घीचैत-घीचैत टूटल। अंतरी आ पीठ एक भेल। रिक्साबला सभमे कैज बेर मारि भए जाइत छलैक। हमर पसिंजर अछि, तूँ किएक बैसा रहल छैं। हमरा पसिंजरकेँ हाथ नहि लगा, खाहे पसिंजर, रिक्साबलामे सेहो मारि भए जाइत छलैक-किरायाक दरक हेतु।

चौकपर किछु लठैत, बदमास सभ ओहिना घुमैत रहैत छल। करवनो चाहबलाकेँ कनैठी देलक, करवनो लटगेना दोकानसँ किछु समान लए अनलक, करवनहुँ रिक्सा बलाकेँ थपरिएलक।

क्रमश: गामक आधासँ अधिक खोपड़ी खपरैल ओ पक्का मकानमे बदलि गेल छलैक। मुदा कैकटा एकचारी खसि पड़ल छलैक। कैकटा फूसक चार छारबाक बिना चुबि रहल छलैक। कतेक बच्चा अखनो बिना खेने सुति रहैत छल। कतेक घरमे डिबिया मटिआ तेल बिना साँझे मिझा जाइत छलैक।

गाममे कतेक घरमे रेडिओ बजैत रहैत छलैक। कतेक घरमे धिआ-पुता सभ नव वस्त्रसभ पहिरि हकार पुरबाक हेतु जाइत

छलैक । गाम आब आधुनिकतासँ परिपूर्ण भए गेल रहैक। ■

23

गामक नवतुरिआ सभ इसकूलक मैदानपर छुट्टी दिनक क्रिकेट खेलाइत छल। गुल्ली, डंडा, कवड्डी, चिक्का सभ बन्द भए गेल रहैक। कैकगोटा गाममे खादीक धोती पहिरि-पहिरि नेता भए गेल छल। मुदा गामक अर्न्तकलह नहि समाप्त भए सकल। नीरज पैंतीस वर्षक भए रहल छलाह । ग्रामीण समाजक दुर्वलतासँ आव ओ ओहिना अभ्यस्त भए गेल छलाह जेना मलेरिआक मच्छर डी.डी.टी. पाउडरसँ।

क्रमश: गाम गेनाइ कम करैत गेलाह आ गामक समाचारसँ हुनकापर प्रभावो कम होमय लगलनि। सरकारी कारोबारसँ फुरसतियो नहि रहैत छलनि। मुदा जखन कखनोक मोन विश्राममे रहैत छलनि तँ जीवनमे एकटा रिक्तताक आभास होइत छलनि। असगर बड़काटा घरमे पड़ल कोना दनि लगैत छलनि।

एकदिन अहिना पड़ल-पड़ल गीत सुनि रहल छलाह कि डाकिआ चिट्ठी दए गेलनि। शीलाक चिट्ठी गामसँ आएल छलनि।

“प्रिय नीरज,

कतेक दिनसँ भेँट नहि भेल। गाममे आब हमरो बड़ उचाट लागि रहल अछि। इसकूलिआ छौड़ा सभ कालेजमे पढ़ए हेतु, कौलेजमे पढ़लाहासभ नौकरीक हेतु सहरमे जा कए बसि गेल आ गाम ओहिना-क-ओहिना अछि। ओएह एकपेरिआ रस्ता, ओएह

चौक, ओहने लोकसभ। शिक्षा संपन्न लोकोमे शोषणक ओएह दानवी प्रवृत्ति। तेँ मोन होइत अछि कतहुँ चली, कनी दिन विश्राम करी। मुदा जाइ कतए? जैसे उड़ि जहाज के पंछी पुनि जहाज पै आयो। मोन होइत अछि जे किछु दिन तोरे डेरापर रही। मोन भरि गप्प-सप्प करी आ निश्चिन्त रही। ओना, तोहर जे इच्छा विचार।

तोहर

शीला।"

नीरज पत्र पढ़ि गुम भए गेल। एकबेर फेर अतीतक संसारमे मोन वापस चलि गेलैक।

नीरज ओहि पत्रकेँ बड़ीकाल धरि पढ़ैत रहल। बहुत रास बिसराएल बातसभ मोनमे आबए लगलैक । ओकरासभकेँ बिसरबाक जतेक प्रयास करए,ततेक बेसी जोरसँ ओ सभ मोन पड़ैक। आखिर,एकबेर फेर गाम जएबाक निश्चय केलक। गामक सीमामे पहुँचतहि ओकरा इसकूल नजरि अएलैक। एकदम पल्लवित-पुष्पित। विद्यार्थीसभ गज-गज करैत। ओकर कार देखि बहुत रास लोकसभ जमा भए गेलैक। नीरज कार रोकि इसकूल दिस विदा भेल। अचानक ओकर ध्यान शीलापर पड़ि गेलैक जे बच्चासभकेँ पढ़ा कए निकलि रहल छलैक।

"की हाल?"

शीला चुप्पे रहि गेल। अगल-वगल बहुत रास लोकसभ छलैक। फेर पुछि बैसलैक-

"कैकदिन रहबैक?

जै दिन रहि सकब। फेर ओ दुनू गोटा गाड़ीमे बैसल आ

गामक मुँहेँ विदा भए गेल।

नीरजकेँ गाम अएला बहुत दिन भए गेल छलनि। तहि बीच ओतए बहुत रास परिवर्तन भेल छलैक। कैकटा खोपड़ीक स्थानपर कोठा बनि गेल छलैक। मुदा सड़कक काते-काते नव-नव खोपड़ी सेहो बसि गेल छलैक। गरीब, धनीक सभ नीरजक स्वागतमे लागल रहल । ओही समयमे टुनटुनमा सेहो ओतए पहुँचल।

"गोर लगै छिकी मालिक।"

"मालिक नै नीरज कहू।"

टुनटुनमा अवाक रहि गेल। कतेक बुधियार हाकिम।

"धिआ-पुता की करैत अछि टुनटुन काका?"

"रिक्सा चलबै है।"

"से किए? पढ़ेलिऐक नहि?आब तँ गामेमे इसकूल खुजि गेलैक?"

"की होतै पढ़ा कए मालिक। पढ़लाहा सभ तँ आओर कोनादिन करैहै। ओहिसँ नीक तँ हमही सभ।"

ई सुनि नीरज गुम्म पड़ि गेल।

तीन दिन गाममे रहलाक बाद नीरज वापस जाए लागल तँ शीला सेहो संगे चलबाक आग्रह करए लगलैक। गामक लोकसभ एहि पर प्रत्यक्ष रूपसँ तँ किछु नहि कहलकैक मुदा पीठ पाछा नाना प्रकारक चर्चा होइत रहलैक।

नीरज रस्ता भरि गप्प-सप्प करैत अपन डेरा पहुँचि गेल छल। तहिआसँ आइ साल भरि बीति गेलैक मुदा शीला गाम वापस नहि गेल। नीरजक संग ओकरा अपार शांति ओ सुख भेटैत छलैक।

नीरज सेहो थाकि गेल छल। मोनमे विश्राम करबाक चिर आकांक्षा छलैक। जेना रौदमे ठेहिआएल लोककेँ छाहरि भेटि गेल हो तहिना नीरजकेँ बुझा रहल छलैक।

बहुत दिनसँ किछु गप्प शीलाक मोनमे घुमि रहल छलैक । मुदा ओ कहि नहि पाबि रहल छलैक। नीरज सेहो किछु सुनए चाहैत छल मुदा सुनि नहि रहल छल। अंततोगत्वा, शीला एकटा पत्र चुपचाप नीरजक कोटक जेबीमे राखि देलक। कार्यालयमे अचानक ओ पत्र नीरजक हाथमे आबि गेलैक। नीरज ध्यानपूर्वक ओकरा पढ़ए लगलाह-

"प्रिय नीरज.!

बहुत दिनसँ हमरा लोकनि फराक-फराक छी। जीवन भरिक संघर्ष ओ असफलतासँ मोन टुटि रहल अछि। आब एकटा विश्रामक प्रयोजन अछि। तोरा किछु कहए चाहैत छलिऔक मुदा कहा नहि सकल। तँ सुनिले। आब हमर सभ आश तोरेपर अछि। आशा अछि तँ हमर गप्प बुझि सकबैं।

तोहर

शीला.. ।"

नीरज ओहि पत्रकेँ पढ़ि कए दुबिधामे पड़ि गेल। मुदा ओकरो अर्न्तमनमे शीलाक प्रति अनुपम स्नेह छलैक। ओहो आब शीलासँ फराक नहि रहए चाहैत छल आ तेँ ओहो एहि प्रस्तावकेँ स्वीकार कए लेलक। मोने-मोने शीलाकेँ अंगीकार कए लेबाक संकल्प लए जखन साँझमे डेरा वापस आएल तँ शीला दुआरिपर ठाढ़ जेना चिर प्रतीक्षारत हो। ■

24

शीला नीरज संगे रहए लागल छलि। नीरजक एकरसता एकहद धरि समाप्त भए गेलनि। मुदा वर्तमान सामाजिक परिवेशमे एहि तरहक क्रिया-कलापक प्रतिक्रियाक अंदाज कएल जा सकैत अछि। ओहिना गामक कतेक लोककेँ नीरजक उन्नतिसँ ईष्या भए रहल छलैक । मुदा एहिबेर एक युगक बाद ओकरा सभकेँ मौका हाथ लागल छलैक। गाम भरिमे ई बात बजिली जकाँ पसरि गेल। जकरा जे मोनमे अबैक से कहैत छलैक। आखिर गाम भरिक लोकक बैसार इसकूलमे भेल जाहिमे बहुतरास पढ़ल-लिखल लोकसभ सेहो एहि घटनाक खिलाफ बजलाह।

मुखिआजी बजलाह-

“हमरा लोकनि आइ बहुत गम्भीर विषयपर विचार करबाक हेतु आएल छी। नीरज पढल-लिखल लोक थिकाह। नीक पदपर स्थापितो छथि एंव सभ प्रकारसँ समाजमे प्रतिष्ठो छनि मुदा विजातीय विवाहित कन्यासँ बिआह कए ओ समाजक व्यवस्थाकेँ तोड़लाह अछि।”

ताहिपर कैकटा युवक सभ सेहो चिकरि उठलाह-

“मुखिआजी एकदम सत्य कहि रहल छथि।”

सर्वसम्मतिसँ निर्णय भेल जे नीरज ओ शीलाकेँ समाजसँ वहिष्कृत कए देल जाए। ई समाचार नीरजकेँ समाचारपत्रक माध्यसमसँ भेटलनि। गामक लोकक प्रतिक्रियासँ ओ कनिको आश्चर्यचकित नहि भेलाह। गामक यंत्रवत् सामाजिक व्यवस्थासँ

एहिसँ बेसी किछु अपेक्षे करब व्यर्थ।

मुदा एहिसँ हुनक संकल्प आओर दृढ़ भए गेलनि। गामक लोकक प्रतिक्रियासँ अप्रभावित ओ शीलाक प्रति अपन निर्णयपर अडिग छलाह। आखिर गाम हुनका काज कहिआ अएलनि। जखन कोनो कष्ट, कोनो समस्या अएलनि तँ ओकर सामना ओ स्वयं केलाह मुदा जहन धक्का लगएबाक मौका अएलैक तँ सभ केओ एक भए गेलाह ।जाहि समाजक विकास अवरूद्ध भए जाइत छैक, जतए लोक स्वयं किछु करबासँ असमर्थ भए जाइत अछि,ततए अहिना सभ दोसरक कुचेष्टा करबाकपर तत्पर भए जाइत अछि।

गामक परिस्थितिसँ नीरज सेहो उबि चुकल छलाह। तहिआसँ ई घटना सभ साफे मोन तोड़ि देलकनि। एही बीचमे हुनकर स्थानान्तरण राँचीक आयुक्तक पदपर भए गेलनि। शीला ओ नीरज ओहीठाम स्थायी रूपेँ बसि जएबाक निर्णय केलनि।

एहि प्रकारेँ गामक तमाम पढ़ल-लिखल लोक विभिन्न सहरमे बसैत गेल। गाममे कहए लेल डाक्टर, इंजीनीयर, वकील, प्रोफेसर सभ छल मुदा वास्तविकतामे केओ गाममे रहैत नहि छल। गाम ओहिना भम्ह पड़ैत छल। नवतुरिआसभ बिला गेल छल। बुढ़बा बुढ़िआसभ काहि कटैत छल, केओ देखनाहर नहि।

कैकटा बहरिआक परिवार गामे रहैक। धिआ-पुतासभ केओ पढ़ैत, केओ ओहिना अनेरूआ साँढ़ जकाँ ढहनाइत रहैत छलैक। अधिकांश स्त्रीगण ओहिना घोधतर झांपल रहैत छलीह।

गाममे कैकटा पैघ लोकक उदय भेल छल। नम्बर दूक कमाइबला इन्जीनियर हरीशक मकान देखय जोगर छल। हुनकर

पिता भरि जन्म हरबाही करैत रहलखिन मुदा बेटा निकलला सपूत। देखिते-देखितेमे पनरह बीघा जमीन कीनि लेलाह। चारि भाए छलाह। चारू भाएक हेतु पक्का मकान बना देलथि। दरबाजापर बड़का-बड़का बरद, टैरगारी, आ की की ने छल। बभनटोलीमे कैकटा डाक्टर भए गेल छल। सभ कमाक बूर्ज कए देने छल।

मुदा गामक नब्बे प्रतिशत लोक ओहिना छल। छुआछूत हटि गेल छल। पैतृक आधारपर प्रतिष्ठाक उत्तराधिकारक व्यवस्था मलिन भए गेल छल। मुदा ओकर स्वरूप नष्ट नहि भेल छल। बड़का लोक अखनो छल। छोटका लोक अखनो राति-राति भरि घूरक आगि सेकि पूषक जाड़ काटि रहल छल। बड़का लोकक पावनि तिहार, आवाजाही, नोत-हकार सभ फराक छलैक।

मुदा एक चीज क्रमश: बदलि रहल छलैक। गाममे गुटबंदीक स्वरूप भिन्न भए गेल छलैक। देशक राजनीति जकाँ गामोक राजनीति आब फेरसँ दलीय आधारपर तय भए रहल छलैक। गामक नवतुरिआसभमे किछु जनवादी दल, किछु प्रगतिवादी दल आ किछु आन-आन दलक भए गेल छल ओ छोटो-मोटो झगड़ामे बाहरक नेतासभ पहुँचि जाइत छलैक- अपन-अपन चेलाक मानोबल बढ़एबाक हेतु जेना कहैत होइक जे लड़ैत रहै जाइ जो बउआ सभ। हम सभ पाछा ठाढ़ छिऔक।

स्थिति तहन भयावह भए जाइत छलैक जखन कि कोनो चुनाओ होएबाक रहैत छलैक। दिन-राति चौकपर लाउउस्पीकर गड़गड़ाइत रहैत छलैक। कखनो ककरो प्रचार तँ कखनो कोनो नेताक भाषण। छौड़ासभ जीपक पाछा-पाछा बड़ी-बड़ी दूर धरि दौड़ि जाइत छल। ■

25

एहिबेर जहिआसँ चुनाओ करएबाक घोषणा भेल तहिआसँ गाममे फेर जेना करेंट मारि देने होइक। चौकपर विभिन्न पार्टीक कार्यालय खुजि गेल। जनवादी दल, प्रगतिवादी दल, किसान दल आ भारतीय विकास दल अलग-अलग अपन कार्यालय खोलि देलक। भोरे-भोर लाउडस्पीकर सभ बजनाइ शुरू कए दैत छलैक। गामक एकजुट जनवादी दलक संग भए गेल छल तँ दोसर गुट प्रगतिवादी दलक संग। शेष लोक सेहो दू गुटमे बँटि क्रमश: किसान दल ओ भारतीय विकास दलक संग दए रहल छल। गामक पुरना झगड़ा सामने आबि गेल छलैक। कैकदिन मारि होइत होइत रूकल। चुनाओ दिन मतदान-केन्द्र पर बेस हंगामा छल। सभ पार्टीक प्रतिनिधि सभ करे-कमान। आधा धंटा धरि मतदान एकदम ठीक-ठाक चलल।

एतबहिमे जनवादी दलक प्रतिनिधि फानल- "नकली अछि। ई मतदाता तीन वर्ष पहिने मरि चुकल अछि।"

प्रगतिवादी दलक प्रतिनिधि प्रतिवाद कएलक- "झूठ बात थिक। ई सही मतदाता थिकाह।"

बात बढ़िते गेल। पीठासीन अधिकारी मतदाताकेँ पुलिसकेँ सुपुर्द कएल। संगे मुखिआजीकेँ बजा पठओलनि। एतवहिमे आठ-दस आदमी लाठी, भाला लए पहुँचि मतदान केन्द्रकेँ घेरि लेलक। ओहिमेसँ केओ कहलक- "ई भोँटबला हाकिम बैमान छौक। सरकारी पार्टीक पक्षमे सभटा फैसला करैत अछि। एकर कोनो ठेकान नहि। चारि-पाँचटा लठैत आगा बढ़ल। मतदान- पत्रक

बंडल छिनि ओहिपर मोहर मारए लागल। दोसर ओकरा मोरि-मोरि तेसर लठैतकेँ दैत गेलैक जे ओकरा क्रमश: बक्सामे धरैत गेल। एतबहिमे पुलिसक जीप पहुँचल आ सभ इएह-ले,ओएह-ले जान लए कए भागल। बेस हल्ला-गुल्लाक वाद मतदान फेर प्रारंभ भेल। मुदा अधिकांश मतदाताकेँ वापस जाए पड़ैत छलनि कारण हुनक मत पहिनहि केओ खसा देने छल।

ओहि इलाकासँ पिछड़ा नेता फेर चुनाओ जीत गेल छल। ई समाचार नीरज ओ शीलाकेँ रेडिओपर भेटलनि। समाचार सुनि शीलाकेँ जेना करेंट लागि गेलनि। दू मिनट धरि किछु सोचैत रहलीह आ तदुपरान्त फेरसँ अपन काजमे लागि गेलीह।

“की सोचैत छलहुँ?” –नीरज पुछलखिन।

“अपना ओहिठामक चुनाओक परिणामपर सोचि रहल छलिऐक। नेताजी फेर जीति गेल।”

“जीततै कोना नहि। एहि देशकेँ एहने लोक सभक काज छैक। इमानदारीक जमाना लदि गेलैक।”

“ठीके कहैत छी। लगातार चारि बेरसँ ओ एम.एल.ए.क चुनाओ जीति रहल अछि। करवनहु अगड़ा-पिछड़ा, करवनहु गरीब-धनीक आदि नानाप्रकारक नारा दए कए जनताकेँ ठगि लैत अछि।”

नेताजीक विकासक माने थिक देशक विकास। नेताजीक प्रत्येक कार्य राष्ट्रीय प्रगतिक हेतु होइत अछि। नेताजीक जयजयकार करैत रहू, नेताजी भाषण देताह, हँसि-हँसि कए नव-नव सपनासभ देखओताह, फेर गाड़ी पकड़ि पटनाक कोनो बड़का होटलमे राति भरि विश्राम करताह। एहिसँ बड़का समाजवाद की

छैक.!

नेताजीक घर पोखरिआ पाटन भए गेल छलनि आ ओहिठाम धरि पीच सड़क बनि गेल छनि। एम्बेस्डर कारपर नेताजी कहिओ काल गाम आबथि तँ सौंसे टोलक छौड़ासभ पाछा-पाछा दौड़ैति आ नेताजी ओकरा सभ दिस एकटा विचित्र भावसँ देखैत आगा बढ़ि जैतथि।

नेताजीक पहिल कनिआ पछवारि गामक छलैक- देहाती गमार। तकरा चारि खण्ड नुआ कीनि दैक आ गरदनिमे हँसुली बना देलकैक-बस तिरपित। नेताजीक मोन ओकरासँ नहि भरैत छलैक। बएसे की भेल छलैक? पैंतीस-छत्तीस। जहिआ गाममे गाड़ीसँ अबैत एकटा-ने-एकटा नवकनिआँ संगमे जरूरे रहितैक।■

26

नेताजीक बेसी सौजनिआ बड़के जातिक लोकसभ भए गेल छनि। कोनो अवसरमे ओएह सभ नोत-हकार करैत छनि। कैकगोटासँ नोत-पत्ता सेहो होइत छलैक । अपना जातिक लोकसभ ओकरा आब घिनौन लगैत छलैक । छोट लोकक नांगट नेना सभकेँ देखि ओकरो मोनमे कोना दनि होमय लगैत छलैक।

नेताजीक बेटा उपनयन करबाक निर्णय भेल छलैक। सामान्यत: ओकर उपनयनक परंपरा नहि छलैक मुदा अपन पृथक आस्तित्व स्थापित करबाक हेतु ओ से करबाक निर्णय केलक।

ओहि अवसरपर नेताजीक ओहिठाम इलाकाक नामी

प्रतिष्ठित लोकनि ओतए पहुँचि गेलाह आ यज्ञोपवित संस्कार बहुत नीकसँ संपन्न भेल। ओहिमे बभनटोलीक सभ गोटेकेँ सभजाना छलैक। ब्राह्मणलोकनि अपन पण्डिताइकेँ तिलांजलि दए पुरी-जिलेबी ओ पाँच प्रकारक मधुरक लोभमे ठीक समयसँ पहिने भोजमे पहुँचि गेलाह। पटनासँ किछु नेतासभ सेहो आएल छलाह। नेनाक उपनयन नीक जकाँ सम्पन्न भेल। इलाका भरिमे नेताजीक यश पसरि गेल।

नीरजकेँ सेहो नोत-हकार गेल छलनि मुदा ओ काजक बहाना बना गेलाह। अहि बातक नेताजीक मोनमे कष्ट रहिए गेलनि मुदा मामिलाक गम्भीरता नीरजकेँ तखन पता लगलनि जखन ओ अपना विरूद्ध लगाओल गेल आरोपक समाचार आर्यावर्तक मुख्यपृष्ठपर देखलनि। समाचार छल-

"एकटा वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारीक प्रेम प्रपंच।"

से समाचार पढ़िते हुनकर देहमे आगि लागि गेलनि। कोनो आओर गप्प रहितैक तँ ओ सहि जइतथि किएक तँ नेताजी हुनकर इलाकाक लोक छलनि, किएक तँ ओ कैकबेर हिनका मदतिओ केने छलनि मुदा आब किछु बाँकी नहि रहलनि सएह सभ सोचि रहल छलाह कि एतबेमे नेताजी कारसँ उतरलाह-

"गोर लगै छी बौआ?" –नेताजी बजलाह।

"आउ, आउ, नेताजी!"- नीरज उठि कए नेताजीक स्वागत करए लगलाह।

"सुनबामे आएल जे अहाँक बदली होमय बला अछि तँ सोचलहुँ जे भेँट कए ली।"

"सुनबामे हमरो बहुत किछु आएल अछि। आखिर अहाँकेँ

ई नीच विचार सभ आएल कोना जे हमरा खिलाफ अपने एतेक कए रहल छी?"

"देखू बौआ? गरमाउ जुनि। अखनो किछु देरी नहि भेलैक अछि। आधा-आधा बाँटि लिअ। मामिला अपने सलटि जेतैक।"

एतबा बात कहिते देरी नीरजक देहमे आगि लागि गेलैक। ओ चिकरि उठलाह-

"नीच! पतित! भाग अहिठामसँ, नहि तँ...?"

नेताजी किछु बड़बड़ाइत आगा बढ़ि गेलाह। एतबामे एकटा कार ओहि डेराक सामनेमे रूकल। नेताजी ओहिमे सवार भए गेलाह आ कार सुर्र... दए घसकि गेल।

"आखिर एकरा बुझा की रहल छैक?"

"कमीश्नर अछि तेँ की?"

"एकरा रस्तापर आनबाक अछि।"

सएह सभ सोचैत नेताजी अपन आवास पहुँचलाह, अपमानित, अस्त व्यस्त ओ अद्विग्न, प्रतिशोधक भावनासँ ओत-प्रोत।

दोसर दिन समाचार पत्रमे समाचार छपल-

"कमीश्नरक निवाससँ महिला लापता। मामिलाक जाँच सी.आइ.डी.केँ सुपुर्द।"

शीलाक अचानक कतहु चलि गेलासँ नीरज अत्यन्त दुखी छलाह। ताहिपर सँ चारूकातसँ अबैत टेलीफोन ओ सी.आइ.डी. अधिकारीसभक पूछ-ताछक तारतम्य तंग केने छलनि। मुदा तइओ मोन कहनि –"धैर्य राखू नीरज!समय एकरंग नहि होइत

छैक।

आपत्ति काल परेखिय चारी, धीरज धर्म मित्र अरु नारी।" ■

27

दोसर दिन भेने नीरज ओसारापर बैसल छलाह। शीलाक कोनो समाचार नहि भेटबाक कारण मोन अत्यन्त दुखी ओ उदास छलनि। एतबामे अखबार दए गेलनि। मुख्य पृष्ठपर शीलाक फोटो देखि ओ गुम पड़ि गेलाह। समाचार छल-

"शीला काण्डक पर्दाफास। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी सी.आइ.डी.क फेरामे।" एकर संगे संग शीलाक विभिन्न भंगिमामे फोटो सेहो छपल छल। ई समाचार गाम-गाम पसरि गेल। ओही दिन साँझमे नीरजकेँ अवांछनीय क्रिया-कलाप कारण गिरफ्तार कए लेल गेल। संगे सरकारी सेवासँ सेहो निलंवित कए देल गेल। ई सभ समाचार सुनि नेताजी मोछपर ताव दए रहल छलाह।

"चलल छलाह पहाड़सँ टकराए। आब बुझथु।"

"शीलाकेँ सेहो आँटा चाउरक भाव बुझा गेल हेतैक।"

"मुदा ओ हेहर बुझा रहल अछि। पता नहि एकरा नीरज की घोरि कए पिआ देलकैक अछि?"

कैकदिन धरि शीलाक कोनो पता नहि चलल। करीब मास दिनक बाद एकटा लवारिस लास गयाक आस-पासमे पुलिसक हाथ अएलैक। पुलिसक कहब जे ओ लास शीलेक थिक । तकर बाद नीरजक खिलाफ मामिला आओर संगीन भए गेलैक।

जमानतक अर्जी उच्च न्यायालयसँ सेहो खारिज भए गेलैक। नेताजी पटना आबि नीरजक विरोधमे षड़यंत्र करैत रहलाह,पुलिस महकमामे जोर लगबैत रहलाह । परिणामत: हुनकर जमानत नहि भेलनि। ओ हत्याक अपराधी संग जेलमे पड़ल रहलाह।

नेताजीक बेटीक बिआहक आयोजन भए रहल छल । गामसँ फराक एकटा छोट-छोट सहर जकाँ बसि गेल छल। चम-चम करैत संगमरमरसँ सजल मकान। एतेक संपन्न तँ गामक पुरनो जमिंदार सभ नहि छलाह। नेताजीक घर चमचम कए रहल छलनि। गामक रस्ता सभपर लाइट जगमग कए रहल छलैक। बहुतरास कार, जीप, फटफटिआ ओहिठाम ढेरी लागि गेल छल।

नेताजीक घरक सामने मे नंगरूमोचीक घर छलैक। ओ नेताजीक पित्ती छल। मुदा ओकरा घर हकारो नहि छलैक। छोट-छोट बच्चा सभ तीन साँझसँ भरि पेट नहि खेने छलैक आ भोजमे जेबाक हेतु किलोल कए रहल छलैक। मुदा नंगरूमोचीक आत्मसम्मान अखनहुँ मरि नहि गेल छलैक। आखिर छल तँ दियादे भले नेताजी आब नामी लोक भए गेल होइक। ओ जोरसँ छौड़ा सभकेँ मना कए देलकैक - “खबरदाऱ !जे टांग हिलओलक ।” छौड़ा सभ असहाय तकैत रहलैक।

नेताजीक बेटीक बिआह बहुत नीकसँ सम्पन्न भए गेलैक। इलाकाक नामी लोकसभ ओहिमे अएलाह। बर इंजीनियर छलाह।

ई सभ समाचार नीरज जेलमे पढ़लथि। ओ शून्य आकाश दिस बड़ी काल धरि देखैत रहि गेलथि। संभवतः वर्तमान समाजक सही प्रतिबिम्ब ओ आकाशमे निहारि रहल छलथि ।

ओमहर नेताजीक यशश्री पसरैत रहलनि। इलाकाक तमाम

प्रतिष्ठित, शिक्षित ओ चर्चित व्यक्ति सभक नेताजीक ओहिठाम बैसार होइत रहैत छलैक। शीलाकाण्डक चर्चा घर-घर होइत रहैत छलैक। ओहि दिन नेताजीक ओहिठाम एही काण्डक चर्चा होइत रहैक आ नेताजी निर्विकारभावसँ बैसल सभक गप्पमे लारि दए रहल छलाह।

नीरजक गिरफ्तारीक समाचार ओकर गाम धरि पहुँचि गेलैक। गाममे पुस्तकालयपर बैसार भेल। ओहिमे नेताजी भाषण करैत बजलाह-

“भाइ लोकनि,

अत्यन्त दुखक गप्प अछि जे हमर इलाकाक एकटा प्रतिभाशाली युवक अपने चालिसँ संकटमे पड़ल छथि। वस्तुत: हम हुनका अपन रस्ता सुधारबाक हेतु बरोबरि कहैत रहलिअनि। मुदा ओ हमर नहि सुनलाह। अपने मोने करैत रहलाह। तहन तँ जे दौरि चलत से ठेसि खसत। यद्यपि हुनकर अपराध बहुत गम्भीर छनि तथापि इलाकाक लोक होएबाक कारणेँ किछु सहानुभूति तँ हमरा अछिए। जँ अहाँ लोकनि आज्ञा दी तँ हम हुनका हेतु किछु प्रयास करी।”

ई बात सुनिते बैसारमे खलबली मचि गेल।

“कदापि नहि, कदापि नहि।” –लोक बाजल। ओहि दिनुका बैसारमे नीरजकेँ जातिसँ वहिष्कृत कए देल गेल छलैक। गामक कल्याण कामनासँ अपन आधा जिनगी खपा देनिहार नीरज समाजक कलंक भए कए रहि गेल छल। एहि परिस्थितिमे नेताजी मामिलाक तह धरि जएबाक हेतु किछु उठा नहि रखबाक घोषणा कए चुकल छलाह।

नेताजी अपन भाषण कइए रहल छलाह कि शीला कारी वस्त्र पहिरने हाथमे फरसा लेने हहाइत-फुहाइत मंचपर नेताजीक सामनेमे प्रकट भए गेलि । जाबे केओ किछु बूझए,किछु करए ताबे तँ ओ अपना काज कए गेल छलि । फरसासँ नेताजीक गरापर तेहन तीव्र प्रहार केने छलि जे ओकर गर्दनिसँ खूनक फुचक्का निकलि पड़ल । नेताजी ठामहि खसल आ खसले रहि गेल । फेर नहि उठि सकल । पुलिस शीलाकेँ पकड़ितए ताहिसँ पहिनहि सामने ठाढ़ कारमे बैसि निपत्ता भए गेलि ।■■

28

मंचपर सरेआम नेताजीकेँ फरसासँ हत्या कए देल गेल रहनि। ओहि घटनाक आइ साल भरिसँ बेसीए भए गेल छल । मामिला न्यायालयमे चलि रहल छल । ओही न्यायालयमे शीला हत्याकंडक मोकदमाक सुनबाइ सेहो भए रहल छल । सुनबाइक दौरान एकाएक शीला न्यायालयमे हाजिर भए गेलि । शीलाकेँ न्यायालयमे अबितहि सरकारी ओकील न्यायालयकेँ शीलासँ परिचय करओलक । सरकारी ओकील बहसमे आगू बजलाह- “जकर हत्याक आरोपमे नीरज जहलमे बंद छथि आ जाहि केसमे आइ न्यायालय विचार करएबला अछि ओही केसक सभसँ मजगूत गबाह बनि शीला स्वयं न्यायालयमे उपस्थित छथि आ न्यायाधीश महोदयसँ किछु कहए चाहैत छथि । न्यायाधीश महोदय सहमतिमे

मुड़ी हिला देलखिन । तकरबाद शिला एक-एक कए सभटा सबूत न्यायालयमे राखि देलनि । ओहि सबूतसभसँ ई स्पष्ट साबित भए रहल छल जे नेताजीक आदमीसभ शीलाक अपहरण कए कोनो एकांत स्थानमे नुकओने रहलैक जाहिसँ मौका भेटलापर ओकर उपयोग कए सकए । शीला अपहरणकर्त्तासभक चाङुरसँ निकलि नेताजीक हत्या कए देने छल । आब ई स्पष्ट छल जे शीला जीबित अछि,ओकर हत्या नहि भेल रहैक । ओ लबारिस लास ककरो आन व्यक्तिक रहल होएतैक। अस्तु,न्यायालय एहि सद्दः सबूतक संज्ञान लैत नीरजकेँ बाइज्जति रिहाइक आदेश देलक ।

शीला द्वारा नेताजीक हत्याक मामिला सेहो ओही न्यायालयमे चलि रहल छल । लगैत छल जे शीलाकेँ सजाए भए जेतैक । मुदा शीलाक ओकील एक-एकटा बात न्यायालयक सामनेमे राखि देलकैक । नेताजी केहन कुकांडसभ केने चल सभटा बात न्यायालयकेँ बताओल गेल । ततबे नहि,शीलाकेँ कोना लगातार नेताजी शोषण करैत रहल सेहो न्यायालयके बताओल गेल। आखिर न्यायालय एहि बातसँ संतुष्ट भए गेल जे शीला संगे नेताजी बहुत अन्याय केने छल । तेँ शीला परेसानी आ उत्तेजनामे नेताजीक हत्या कए देलक । न्यायालयकेँ शीलाक प्रतिए बहुत सहानुभूति भए गेल रहैक । आक्रोशमे कएल गेल ओकर ई अपराध परिस्थितिजन्य कारणसँ कएल गेल छल । अंततः न्यायालय ओकरो बाइज्जति बरी कए देलक ।

बहुत दिनक बाद एक बेर फेर शीला आ नीरज संगे-संग अपन डेरा पहुँचि बहुत प्रसन्न रहथि । शीला आ नीरज समाजमे

सत्यक संवादवाहक बनि गेल छलाह । सभ हुनके जयगान कए रहल छल । सभ कहि रहल छल--“सत्यमेव जयते!”

****



लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र
पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र
माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी
बएस : ६९ वर्ष
पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह
मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी
वृत्ति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)
स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)
शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक
प्रकाशित कृति :
मैथिलीमे:-
१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध), ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग), ४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास) १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

In English: -
1. The Lost House (Collection of short stories)
2. Life is an art

हिन्दी में –
१.न्याय की गुहार(उपन्यास)
(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipcart.com पर सँ कीनल जा सकैत अछि)

इमेल : mishrarn@gmail.com
ब्लोग : mishrarn.blogspot.com
Mobile -9968502767
एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।